केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका

२ अप्रैल २०१५ अंक, वर्ष २१, नं ६७, लक्ष्मीनगर, पट्टम पालस, तिरुवनन्तपुरम-६९५ ००४

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के तत्वावधान में १० जनुवरी २०१५ को संपन्न विश्व हिन्दी सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए दीप जलाते हैं जस्टिस हरिहरन नायर। चित्र में अम्बासडर श्री. श्रीनिवासन, श्रीरामदास आश्रम मठाधिपति स्वामी, डॉ. चन्द्रशेखरन नायर, के रामनपिल्लै, डॉ.टी.पी.शंकरनकुट्टि नायर, श्री. गोपिनाथन नायर, श्रीमती राजपुष्पम आदि।

विश्व हिन्दी सम्मेलन के अवसर पर डॉ.चन्द्रशेखरन नायर द्वारा लिखित एवं मातृभूमि द्वारा प्रकाशित अध्यात्म रामायण मलयालम गद्य परिभाषा का लोकार्पण और निशुल्क वितरण स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती मातृभूमि सम्पादक श्री. शेखरन नायर को एक प्रति देते हुए करते हैं।

विश्व हिन्दी दिवस समारोह में पेपर प्रस्तुत करनेवाले।

विश्व हिन्दी सम्मेलन एवं डॉ.चन्द्रशेखरन नायर जयन्ती समारोह में विश्व हिन्दी विश्वविद्यालय की सदस्या डॉ.एस.तंकमणि अम्मा डॉ.नायर को अंगवस्त्र पहनाती है। चित्र में अम्बासडर टी.पी.श्रीनिवासन, मातृभूमि शेखरन नायर, जस्टिस हरिहरन नायर, श्री के .रामनपिल्लै आदि।

पूर्व अम्बासडर श्री.टी.पी.श्रीनिवासनजी
सम्मेलन का अध्यक्ष भाषण देते हैं।

डॉ. रंजित रविशैलम भाषण देते हैं।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका

२ अप्रैल २०१५ अंक, वर्ष २१, नं ६७ लक्ष्मीनगर, पट्टम पालस, तिरुवनन्तपुरम-६९५ ००४

सम्पादक

डा० एन० चन्द्रशेखर नायर

संरक्षक

श्रीमती शांता बाई (बेंगलोर)
श्री. डी.शशांकन नायर
श्रीमती कमला पद्मगिरीश्वरन
डा० वीरेन्द्र शर्मा (दिल्ली)
डा० अमर सिंह वधान (पंजाब)
श्री. हरिहरलाल श्रीवास्तव (काशी)
श्रीमती के. तुलसी देवी (चेन्नै)
श्रीमती रजनीसिंह
डा. मिनी सामुवल
डा. सविता प्रमोद

परामर्श-मण्डल

डा० एस.तंकमणि अम्मा
डा० मणिकण्डन नायर
डा० पी.लता
श्रीमती आर. राजपुष्पम
श्रीमती श्रीदेवी एस.
श्रीमती एल. कौसल्या अम्माल
श्रीमती रमा उण्णित्तान

सम्पादकीय कार्यालय

श्रीनिकेतन, लक्ष्मीनगर,
पट्टम पालस पोस्ट
तिरुवनन्तपुरम-६९५ ००४
दूरभाष-०४७१-२५४१३५५

प्रकाशकीय कार्यालय

मुद्रित : (द्वारा)
श्रीनिकेतन, लक्ष्मीनगर,
तिरुवनन्तपुरम - ६९५ ००४
मूल्य-एक प्रतिः २०.०० रुपये
आजीवन सदस्यता : १०००.००
संरक्षक : २०००.००

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका कहाँ कहाँ जाती है?

कन्याकुमारी, मैसूर-२, महाराष्ट्रा, मणिपुर, मद्रास-६, कलक्कता-२, नई दिल्ली (अनेक स्थान), गुन्डूर, त्रिवेन्द्रम (अनेक जगहें), बागपत (यु.पी.) उन्नाव (उ.प्र.), बिलासपुर (म.प्र.), गुंतकल, जबलपुर, इलहाबाद, अहमदाबाद, बिरखडी, जमशेदपुर, लातूर, हैदराबाद, रतलाम, देवरिया, गाजियाबाद, इम्फाल, चुडीबाज़ार, पीली भीत, फिरोजाबाद, अम्बाला, लखनऊ, बलांगीर, बिहार, पटना, गया, बांका, ग्वालियर, भगलपुर, देवधर, जयपुर, बनारस, तृशूर, आलप्पुषा, मेरठ केन्ट, कानपुर, उज्जैन, पानीपत, होरंगाबाद, सीतामठी पोस्ट, प्रतापगढ, सरगुजा, बिजनौर, भीलवाडा, सतना, रेलमंत्रालय, तिरुवल्ला, वर्कला, कोट्टयम, नई माही, ओट्टप्पालम, चेप्पाड, लक्किडि, नेय्याट्टिनकरा, कोषिकोड, पय्यन्नूर, कोल्लम, मान्नार, मंगलोर, पुरनपुर, पंजाब, विशाखपटनम

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय नई दिल्ली द्वारा निर्देशित जगहें :

तमिल नाडुः- अरुम्बाक्कम, तोरापक्काओ, मद्रास, चेन्नै-३२, क्रोमोपेट्टा, चेन्नै-२१, चेन्नै-२, चेन्नै-८, कान्चीपुरम, तिरुचिरापल्ली, तिरुचिरापल्ली-२, नोर्त अरकोट, ताम्बरम, कोयम्बतूर, सेलम, सेलम-२६, चेन्नै-३४, चेन्नै-२४, तिरुचिरापल्ली-२, चेन्नै-३०, कोयम्बतूर-४, चेन्नै-२८, चेन्नै-८६। **गुजरातः-** अहमदाबाद, बरोडा। **कर्नाटकः-** बांगलोर, चित्रदुर्ग, श्रीनिगेरी, मौंगलोर, मैसूर, हस्सन, मान्डीया, चिगमौंगलोर, षिमोगा, तुमकूर, कोलार। **महाराष्ट्राः- मुम्बई,** कोलाबा-मुम्बई, मुम्बई-२०२, माटुंगा, मुम्बई-८, मुम्बई-८६, अन्देरी-६९, मुम्बई-२६, मुम्बई-८७, मुम्बई-२, औरंडगाबाद-३, औरंडगाबाद-२, औरंडगाबाद-१, नागपुर, रामटाक-नागपुर, सताना, नन्दगौन-नासिक, पूना, पूना-१, पूना-४, मानमाड-नासिक, चन्द्रपुर, अमरावती, कन्डहार, कोलहापुर, बानडरा, अकोला, नासिक, अहमदनगर, जलगौन, दुलिया, सांगली-कोलहापुर, षोलापुर, सतारा, सान्ताक्रूस, बारसी-४१३, माटुंगा, संगली-४१६। **वेस्ट बंगालः-** कलक्कता। **हैदराबादः-** सुल्तान बाज़ार। **गौहाटीः-** कानपुरा। **नई दिल्लीः-** आर, के पुरम। गोवाः- मपुसा-५०७।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं हैं। सम्पादक

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका केरल विश्व विद्यालय से अनुमोदित पत्रिकाओं की सूची में शामिल की गयी है। (संपादक)

www.hindisahityaacademy.com

सम्पादकीय

हिन्दी भाषा को अकेले राष्ट्र भाषा निश्चित करें

लोकराष्ट्रों में भारत आज एक स्वतंत्र स्वाधीन राष्ट्र है। जनतंत्रात्मक कार्य-विधान भारत का अस्तित्व प्रथम गणनीय माना जाता है। आज अपनी स्वतंत्र आविष्कृति की प्रगति के कारण भी भारत समुन्नत देशों की गणना में है। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद ६९ वर्षों से भारत देश अनेक दिशाओं में प्रगति एवं समृद्धि को ही सूचित करता है। यह हमारे लिए आश्वास एवं आनन्द की बात है। हमारी विदेश नीति प्रौढ़ बुद्धि को ही घोषित करती है। हमारी राजनीतिक धरातल स्वस्थ नींव पर है। देश में आम तौर पर शांति का वातावरण कायम है। नई भारत सरकार के प्रधान शासक भी अन्तरदेशीय स्तर पर कीर्तिमान स्थापित हुआ है। हम यहां तक संतोष एवं स्वस्थ कार्य-निर्वहण के साथ हैं।

इतना होने पर भी हम एक बडी कमी की ग्लानि अनुभव कर रहे हैं। वह हमारी राष्ट्रभाषा के चिंतन में है। एक स्वतंत्र, प्रौढ देश की अपनी एक राष्ट्रभाषा तो अवश्य होनी चाहिए। हमें स्वतंत्र बना दिया है महात्मा गाँधी ने। स्वतंत्र्य के नाम पर उन्होंने अपने प्राण भी न्योछावर कर दिये थे। उन्होंने भारत की एक राष्ट्रभाषा निश्चित की। वही थीं हिन्दी भाषा। गाँधीजी ने हिन्दी को राष्ट्र की भाषा चुन लेते समय उसकेलिए अवश्यक सभी बातों पर विचार किया था। देश के भाषा पंडितों का भी अभिमन उन्होंने स्वीकार किया था। इन सारी बातों से ऊपर एक बडी बात यह है कि वह हमारी ही श्रेष्ठ और महती भाषा संस्कृत की पोती है। स्वतंत्र देश ने हिन्दी को अपनी राष्ट्रभाषा घोषित की, लेकिन स्वाधीनता, के पश्चात् ६९ लम्बे वर्षों के बाद भी हिन्दी इस भारत महाराज्य की स्वतंत्र राष्ट्र भाषा नहीं बनी है।

मैं ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और अन्य सभी मंत्रियों को पंजीकृत पत्र भेजे थे कि पार्लियामेंट में हिन्दी का प्रश्न हल करें और उसकी व्यवस्था तुरंत की जाय। पर, अब तक उस संबंध में सभा में कोई चर्चा नहीं हुई है। माननीय बाजपेयी सरकार के समय स्वतः इस प्रश्न का हल होगा, यही चाहते ये पर कुछ न हुआ। लेकिन अब हिन्दी को अकेली राष्ट्रभाषा निश्चित करने का नियम स्थिर बना लेना है। नहीं, तो फिर इसकी व्यवस्था आगे सुदृढ नहीं बनायी जा सकती। लगता है, इस प्रश्न पर आगे हिन्दी सेवियों एवं राष्ट्रहित चिंतकों को उपवास-सत्याग्रह आदि कार्यों में लग जाना पडेगा। भारत की राष्ट्रभाषा के नाम पर इस प्रकार का आयोजन होना सरकार के हित में शुभकर नहीं होगा।

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर

विश्व हिंदी दिवस समारोह : प्रतिवेदन

डॉ.एस.तंकमणि अम्मा

१० जनवरी। विश्व हिन्दी दिवस। केरल की प्रतिष्ठित हिन्दी संस्था-केरल हिन्दी साहित्य अकादमी, तिरुवनन्तपुरम ने हिन्दी का वैश्विक परिप्रेक्ष्य विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन करते हुए समुचित ढंग से विश्व हिन्दी दिवस मनाया। स्वागत एवं संचालन का कार्य संभालते हुए अकादमी की सचिव एवं नामी लेखिका डॉ.पी.लताजी ने इस आयोजन के महत्त्व को यों रेखांकित किया।

डॉ. लता के स्वागत भाषण का अंश:

दस जनवरी को हिन्दी प्रेमी विश्व हिन्दी दिवस के रूप में मनाते हैं। यह संयोग की ही बात है कि केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के अध्यक्ष तथा बहुमुखी प्रतिभावान साहित्यकार एवं चित्रकार आदरणीय डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी का यह जन्मदिन है। इस कारण अकादमी के सदस्यों और नायर जी के हितैषियों शिष्यजनों ने मिलकर डॉ.चन्द्रशेखरन नायर जयन्ती भी मनाने का निर्णय लिया है।

राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी ने किया।

उद्घाटन भाषण से :

हिन्दी भारतीय संस्कृति की उद्घोषणा करनेवाली भाषा है। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने उसे भारत की राष्ट्रभाषा घोषित किया। हिन्दी पहले से ही भारत की संपर्क भाषा रही थी। स्वातंत्र्योत्तर काल में भारत संघ की राजभाषा के पद पर हिन्दी प्रतिष्ठित हो गयी। अब तो वह विश्वभाषा बन गयी है। विश्व में सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा के रूप में हिन्दी को मान्यता मिली है। विश्व हिन्दी सम्मेलनों ने उसके गौरव को बढाया है। अब तो भारतवासियों को चाहिए कि वे अपनी भाषा को राजभाषा के रूप में पूरी तरह प्रतिष्ठित करें। केरल हिन्दी साहित्य अकादमी की महामंत्री डॉ.एस.तंकमणि अम्मा राष्ट्रीय संगोष्ठी की अध्यक्षा थी। अपने अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने हिन्दी के वैश्विक आयामों पर प्रकाश डाला।

अध्यक्षीय भाषण से:

तमाम विश्व में हिन्दी भाषा के बढ़ते प्रभाव और प्रचार-प्रसार को मद्देनज़र रख कर सन् १९७५ में नागपुर में संपन्न हुए प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन में हिन्दी को विश्वभाषा का स्थान दिलाने का प्रस्ताव पारित हुआ था। आज यह देखा जा सकता है कि विश्व के अधिकांश देशों में हिन्दी भाषा किसी न किसी प्रकार प्रवेश कर गयी है। मॉरीशस, फीजी, त्रिनिदाद, सुरीनाम, गयाना जैसे देशों में जहाँ आप्रवासी भारतीयों की संख्या ज्यादा है, हिन्दी का खूब प्रचार है। खाड़ी देशों में रहनेवाले भिन्न-भिन्न भाषा भाषियों के बीच हिन्दी संपर्क भाषा की भूमिका निभाती है। भूमंडलीकरण, बाज़ारवाद, व्यापारवाद आदि ने भी हिन्दी को काफी बढ़ावा दिया है। जर्मन, चीनी, फ्रांसीसी कंपनियों ने हिन्दी के महत्त्व को पहचाना है। अमेरिका की सरकार भी हिन्दी सीखने-सिखाने पर करोड़ों डॉलर खर्च करती है। भारतीय सांस्कृतिक संबन्ध परिषद ने विश्व के कई देशों में भारत विद्यापीठों की स्थापना की है जहाँ हिन्दी अध्ययन-अध्यापन की सुविधा है। हिन्दी फिल्मों फिल्मीगीतों, टी.वी.चानल आदि ने भी वैश्विक स्तर पर हिन्दी का प्रचार-प्रसार बढ़ाया है। अब भारत सरकार की ओर से हिन्दी को संयुक्त राष्ट्रसंघ की आधिकारिक भाषा बनाने का प्रयास चल रहा है। फिलहाल संयुक्त राष्ट्रसंघ की छह आदिकारिक भाषाएँ हैं - चीनी, अंग्रेज़ी, फ्रेंच, रूसी, स्पेनिश तथा अरबी। सातवीं भाषा के रूप में हिन्दी भाषा को स्थान प्राप्त होने पर सही अर्थों में हिन्दी विश्व-भाषा के पद पर प्रतिष्ठापित हो जाएगी। सब से पहले यही चाहिए कि भारतीय अपने देश में संपर्क भाषा राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा के पदों पर उसे पूरा मान-सम्मान दे दें। यह तो देश और देशवासियों के आत्मसम्मान की ही बात है। श्री.शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय के पन्मना केन्द्र के हिन्दी विभाग की अध्यक्षा डॉ.के.श्रीलता, श्रीनारायण कॉलेज, कोल्लम के हिन्दी विभाग की प्रोफेसर डॉ.एस.लीलाकुमारी अम्मा, महात्मा गाँधी कॉलेज के हिन्दी विभाग की प्रोफेसर डॉ.गिरिजा डी. आदि ने आशीर्वाद भाषण दिए। श्रीमती सुमा आई, डॉ.लक्ष्मी एस.एस., श्रीमती राखी एस.आर., दिव्या वी.एच., डॉ.धन्या एल. डॉ.सौम्या वी.एम., कमलानाथ एन.एस., डॉ.एलिसबेत जॉर्ज, डॉ.जयश्री ओ., डॉ.महेश (श्रीनारायण कॉलेज, चेंपष्नती) आदि ने हिन्दी के वैश्विक परिप्रेक्ष्य के विभिन्न पहलुओं पर अपने आलेख प्रस्तुत किये। उन आलेखों के संक्षिप्त रूप यहां दिये जा रहे हैं।

അദ്ധ്യാത്മ രാമായണം

മാതൃഭൂമി പ്രകാശൻ

ശ്രീമദ് ഭാഗവതം ഏകാദശസ്കന്ധം

മുക്തിസ്കന്ധം

രണ്ടിന്റെയും ഗദ്യപരിഭാഷ :

ഡോ. എൻ. ചന്ദ്രശേഖരൻ നായർ

ശ്രീനികേതൻ, ലക്ഷ്മീനഗർ, തിരുവനന്തപുരം - 4

ശ്രീമദ് ഭാഗവതം വില - 250.00

हिन्दी : भारत की आवाज़ रही है

डॉ.एस.लीलाकुमारी अम्मा

राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा हिन्दी का उद्‌भव संस्कृत से हुआ है। संस्कृत से उद्‌भूत होकर भी पाली, प्राकृत और अपभ्रंश से होते हुए इसका विकास हुआ। बारहवीं सदी राजभाषा हिन्दी के इतिहास में एक नया मोड है। मुगलों के शासनकाल में फारसी ही मान्यताप्राप्त राजभाषा थी तो भी सहराज भाषा के रूप में हिन्दी को भी प्रशासन में प्रश्रय मिला। स्वतंत्रता संग्राम की भाषा निश्चित रूप से हिन्दी की थी। राजभाषा के पद पर हिन्दी भाषा को अमल करने में स्वतंत्रता आन्दोलन की अहम भूमिका रही है। १४ सितंबर सन् १९४९ को ही हमारी संविधान सभा ने संविधान के अनुच्छेद ३४३ द्वारा संघ की राजभाषा हिन्दी तथा लिपि देवनागरी स्वीकार की थी।

भूमण्डलीकृत बाज़ार के दौर में आज हर उत्पाद का बाज़ार पूरी दुनिया में व्याप्त हुआ है। उपभोक्ता की दृष्टि से पूरे विश्व में हिन्दी क्षेत्र में एक विशाल उपभोक्ता क्षेत्र है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने हिन्दी भाषा को ही अपनाया और अपने कर्मचारियों को हिन्दी में प्रशिक्षण देना प्रारंभ कर दिया है। वे जानते हैं कि हिन्दी भाषा को सीखे बिना उनका माल भारत में नहीं बिकेगा।

बाज़ारवाद के बढते कदमों के साथ ही हिन्दी के बहुआयामी रूप हमारे सामने आ रहे हैं। हिन्दी के विज्ञापन की सबसे बडी चाल है - लिखित भाषा के रूप में अंग्रेज़ी और वाचिक भाषा के रूप में हिन्दी को बनाए जाने की कोशिश। हिन्दी की विकासयात्रा पत्रकारिता, जनसंचार माध्यमों तथा हिन्दी सिनेमा के साथ चल रही है। आज की सबसे बडी चुनौती है कि हिन्दी हृदय की अभिव्यक्ति के साथ मस्तिष्क की जटिलताओं की तथा उन जटिलताओं से उद्‌भूत विज्ञान और तकनीक की संवाहिका बन सके। हिन्दी ने इस क्षेत्र में कोलाहल किया है। हिन्दी को किसी भाषा से विरोध नहीं है। भारत में हिन्दी ही बोलचाल, राजकाज और व्यवहार की भाषा होनी चाहिए। हिन्दी हर युग में इस देश की आवाज़ रही है, आज भी है और आगे भी रहेगी।

प्रवक्ता, एस.एन.कॉलेज, कोल्लम।

आदमी

नरेश हमिलपुरकार

चिटगुप्पा-५८५४१२, बीदर (कर्नाटक)।

कौन जाने किस पल रंग बदलता है आदमी
खिलौनों की तरह आदमी से खेलता है आदमी

प्रेम सुख चैन से जीने खुदा आदमी बनाया
मगर आदमी से नफरत करता है आदमी

काम नाम देश वेश धर्म बदलता है आदमी
अपने पराये को, खुद को भी मारता है आदमी

दो कौड़ी के लिए दोस्ती प्यार वफा हीं नहीं
जिस्म ओ जान ईमान तक बेचता है आदमी

झूठ फरेब, खून कत्ल तक करता है आदमी
मत पूछो और क्या क्या करता है आदमी

जानवर परिन्दे भी नहीं बेचते अपनों को
मगर अफसोस, आदमी को बेचता है आदमी

ऊँच नीच, जात पात, भेद करता है आदमी
बुरी नज़र से भले को भी देखता है आदमी

सज़ा भुगतकर भी सुधरता नहीं आदमी
पता न था, जानवर से बदतर होता है आदमी •

शुभकामनाएँ

राष्ट्रीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के २०१४ का पुरस्कार

आर.राजपुष्पम पीटर
(पूर्व सचिव, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी)
ग्रंथ 'वेलुतंपि दलवा एवं भारत का स्वतंत्रता संग्राम' (हिन्दी तर्ज्जमा)

डॉ.के.एस.विजयलक्ष्मी
(खजानजी, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी)
शोध ग्रंथ

बी.आनन्दवल्ली
(सदस्य के.हि.सा.अ.)
ग्रंथ 'बाष्पाञ्जली' (विलापकाव्य)

प्रस क्लब में चलाये गये वार्षिक सम्मेलन में फरवरी २१ को मुख्य संरक्षक डॉ.वेल्लायणि अर्जुनन, संरक्षक डॉ.वी.हरिकुमारन नायर और अध्यक्ष प्रो.डॉ.तिरुमला चंद्रन द्वारा संम्मानित किया गया।

विश्व हिन्दी सम्मेलन एवं विदेशों में हिन्दी

डॉ.धन्या एल.

बहुभाषा भाषी भारत देश में स्वतंत्रता का संदेश देते हुए महात्मागाँधी ने देखा कि अगर कोटि-कोटि कंठों से एक ही भाषा निकले तो देश की एकता सुगम बनेगी। हिन्दी का जन्म इस गौरवमयी भारत भूमि के उदर से हुआ है। इसलिए इसमें भारत की आत्मा सन्निहित है। हिन्दी की वाणी में भारत बोलता है, भारतीय संस्कृति बोलती है।

हिन्दी आज भारतीय भाषा ही नहीं, विश्व भाषा भी है। वैश्वीकरण एवं भूमंडलीकरण की चुनौतियों के हर क्षेत्र पर प्रभाव पड़ा हुआ दिखाई देता है। "वसुधैव कुटुंबकम्" की परिकल्पना को हिन्दी भाषा के कारण संजीवनी मिल रही है। विश्व के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के बीच बढ़ती अन्योन्याश्रित प्रवृत्ति ही 'भूमंडलीकरण' है। आज भारत के 'सिनेमा' विश्व स्तर के मानने लगे हैं। विदेशी नागरिकों का 'हिन्दी फिल्म' के प्रति आकर्षण बढ़ा है। विश्व में हिन्दी का उपयोग बढ़ने का एक कारण 'विज्ञापन' में हिन्दी का बढ़ता प्रयोग है। हिन्दी विज्ञापनों के ज़रिए चीज़ों का प्रसार बढ़ानेवाली अनेक बहुराष्ट्र कंपनियाँ आज भारत में है।

हिन्दी 'विश्व भाषा' है और विदेशों में उसका उपयोग बढ़ता जा रहा है। मोरिशस में सन् १९२६ में 'हिन्दी प्रचारिणी सभा' की स्थापना 'तिलक विद्यालय' नाम से हुई। रूस, जापान, फिनलैंड, मोरिशस, फिजी, सूरीनाम, इंडोनेशीया, जावा, सुमात्रा, फ्रांस, जर्मनी, हंगरी, चीन, रोमानिया आदि कई जगहों में हिन्दी का उपयोग होता है। विश्व भर में समाचार बुलेटिन, सिनेमा तथा कैसट के माध्यम से हिन्दी का प्रसार हो रहा है।

'विश्व हिन्दी सम्मेलन' हिन्दी भाषा का सबसे बड़ा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन है, जिसमें विश्वभर से हिन्दी विद्वान, साहित्यकार, पत्रकार, भाषा विज्ञानी, हिन्दी प्रेमी आदि जुटते हैं। विश्व हिन्दी सम्मेलन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं - (१) अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की राष्ट्रभाषा के प्रति जागरूकता पैदा करना, (२) समय-समय पर हिन्दी की विकास यात्रा का आकलन करना, (३) जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहन देना। (४) हिन्दी के प्रति प्रवासी भारतीयों के भावुकतापूर्ण व महत्वपूर्ण रिश्तों को और अधिक गहराई व मान्यता प्रदान करना आदि।

अब तक नौ विश्व हिन्दी सम्मेलन संपन्न हो चुके हैं। 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' वर्धा द्वारा आयोजित प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन १० जनवरी से १४ जनवरी १९७५ तक नागपुर (भारत) में संपन्न हुआ। दूसरे विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन मॉरीशस की राजधानी पोर्ट लुई में २८ अगस्त १९७६ से ३० अगस्त १९७६ तक चले। तीसरे विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन भारत की राजधानी दिल्ली में २८ अक्तूबर से ३० अक्तूबर १९८३ तक किया गया। चौथा विश्व हिन्दी सम्मेलन दो दिसंबर १९९३ से चार दिसंबर १९९३ तक पुनः मॉरीशस की धरती पर हुआ। पाँचवाँ सम्मेलन सन् १९९६ अप्रैल चार से आठ तक त्रिनिदाद और टोबैगो में संपन्न हुआ। छठवाँ सम्मेलन लंदन में सितंबर २४ से २८ सितंबर, १९९९ तक किया गया। सातवाँ सम्मेलन का आयोजन २००३ जून पाँच से जून नौ तक सूरीनाम में संपन्न हुआ। आठवाँ सम्मेलन का आयोजन १३ जुलाई २००७ से १५ जुलाई २००७ तक न्यूयार्क में हुआ। इस सम्मेलन का केंद्रीय विषय था - 'विश्व मंच पर हिन्दी'। वहाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन २२ सितंबर २०१२ से २४ सितंबर २०१२ तक दक्षिम अफ्रिका के जोहन्नासबर्ग में संपन्न हुआ। सन् २००६ से भारत सरकार ने १० जनवरी को प्रतिवर्ष 'विश्व हिन्दी दिवस' के रूप में मनाने का निर्णय लिया है। क्योंकि प्रथम विश्वहिन्दी सम्मेलन १० जनवरी को शुरू हुआ था।

'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति', वर्धा की माँग और प्रयास के परिणामस्वरूप तथा विश्व हिन्दी सम्मेलनों के मंतव्यों के आधार पर 'महात्मागाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय' भारत सरकार द्वारा वर्धा में स्थापित किया गया। मोरीशस में फरवरी २००८ में 'विश्व हिन्दी सचिवालय'की स्थापना की गयी। यहाँ से 'विश्व हिन्दी त्रैमासिक' निकलती है।

विदेशों में हिन्दी का अध्ययन होने के साथ-साथ हिन्दी में पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं। 'भारत दर्शन' न्यूज़ीलैंड से प्रकाशित हिन्दी साहित्यिक पत्रिका है। 'सरस्वती' पत्र कानड़ा से प्रकाशित होता है। 'अन्यथा' अमेरिका में रहते भारतीय मित्रों द्वारा प्रकाशित है। 'हिन्दी परिचय' और 'गर्भनल' प्रवासी भारतीयों की ई - पत्रिका है। 'कलायन', 'कर्मभूमि', हिन्दी यू.एस.ए. की त्रैमासिक पत्रिका, 'हिन्दी जगत्', 'हिन्दी बालजगत' एवं 'विज्ञान प्रकाश' विश्व हिन्दी न्यास समिति द्वारा प्रकाशित पत्रिकाएँ हैं। 'ई-विश्वा' अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति, सेलम की त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका है। 'प्रवासी टुडे' अंतर्राष्ट्रीय साहित्यिक संस्था की पत्रिका है। 'पुरवाई' आदि पत्रिकाएँ विदेशों से प्रकाशित होकर भी हिन्दी के प्रति अपना दायित्व वहन करने में सफल सिद्ध हुई हैं।[१]

चीनी भाषा में रवीन्द्रनाथ टागोर की कृतियों, मैला आंचल (फणीश्वरनाथ रेणु का उपन्यास, जो हिन्दी का प्रथम आंचलिक उपन्यास है।) आदि का अनुवाद हुआ है। चीन की ऐतिहासिक दीवार की स्वागत शिला पर 'ओम नमो भगवते' हिन्दी में लिखा गया है। अमेरिका का

जनसंचार माध्यमों में हिन्दी का वैश्विक रूप

डॉ. सौम्या वी.एम.

वैश्वीकरण के फलस्वरूप अब दुनिया अपूर्व रूप से छोटी बनती जा रही है। वैज्ञानिक उन्नति, औद्योगिक विकास, संगणक, फैक्स, इंटरनेट और ई-मेल के इस युग ने हमारे सोच-विचार और विकास के सारे मानदंड बदल दिए हैं। संचार माध्यमों ने अब दुनिया को एक मुट्ठी के अंदर बंध कर दिया है। आज ये सारे माध्यम जनभाषा को अपना रहे हैं।

खडीबोली हिन्दी आज हमारी संपर्क भाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा तथा प्रयोजनमूलक भाषा के पदों पर विराजमान है। प्रयोजनमूलक हिन्दी वर्तमान युग की एक अनिवार्य आवश्यकता है। जनसंचार माध्यमों की हिन्दी, प्रयोजनमूलक हिन्दी के प्रयुक्तियों में एक है। हम जानते हैं और अच्छी तरह अनुभव करते हैं कि 'संचार' जीवन के लिए बहुत आवश्यक है। इसके बिना हम रह नहीं सकते। आज हमारे दैनिक जीवन की सारी की सारी बातें जनसंचार माध्यम ही तय करते हैं।

आज हर देश में हिन्दी भाषा-भाषी लोग रहते हैं। इसलिए संचार माध्यमों ने भी हिन्दी को अपनाया। पहले तो हमारे देश में अंग्रेज़ी पत्रों को जो प्रमुखता थी, वह हिन्दी पत्रों को नहीं मिली थी। लेकिन आज स्थिति बदल गयी है। विदेशों में भी आज हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन हो रहा है। जैसे कानडा से 'सरस्वती', अमेरिका से 'अन्यथा' आदि।

प्रमुख श्रव्य माध्यम 'रेडियो' द्वारा हिन्दी विदेशों में भी पहुँच गयी। 'बी.बी.सी. लंदन' तक के हिन्दी ने रेडियो के ज़रिए अपनी जड़ें और शाखायें फैला दीं। इसने हिन्दी के वर्तमान को ही सुगठित नहीं बनाया बल्कि उसका भविष्य उज्ज्वल बनाते में भी योगदान किया है। हिन्दी के प्रचार को और उसकी स्थिति को अधिकाधिक गति देने में इसकी भूमिका महत्वपूर्ण माननी पडेगी।

हिन्दी को जन-जीवन के बीच पहुँचाने में दूरदर्शन इन दिनों सबसे प्रभावी साधन सिद्ध हुआ है। 'सिनेमा' भी जनसंचार का एक माध्यम है। शुद्ध हिन्दी का प्रयोग न होने पर भी यह भाषा के प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। आज दैनिक कामकाज 'कंप्यूटर' के अधीन हो चुके हैं। इस संचार-प्रक्रिया में आज हिन्दी भी शामिल है। हिन्दी में अब इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध है। इंटरनेट पर भारतीय भाषाओं के आगमन का पहला अवसर हिन्दी पोर्टल 'वेब दुनिया' को मिला।

विश्व हिन्दी सम्मेलन एवं विदेशों में हिन्दी...

'टेक्सास' प्रांत हिन्दी लोकप्रियता के मामले में सबसे आगे है।

अब तक प्राप्त जानकारी के अनुसार हिन्दी साहित्य के इतिहास का सर्वप्रथम लेखक एक विदेशी फ्रेंच विद्वान गर्सी द ताँसी है। उन्होंने फ्रेंच भाषा में 'इस्तवार द ला लितेरात्यूर एंदुई ए ऐंदुस्तानी' नामक ग्रंथ में अंग्रेज़ी वर्णक्रमानुसार हिन्दी और उर्दु भाषा के अनेक कवियों और कवयित्रियों का परिचय दिया है। ग्रंथ के आरंभ में लेखक ने २५ पृष्ठों की भूमिका में हिन्दी भाषा और उसके साहित्य के विषय में विचार प्रकट करते हुए उर्दु भाषा को हिन्दी के अंतर्गत सम्मिलित कर लिया है।

एक चेक नागरिक एवं भारत के पूर्व राजदूत डॉ.ओदेलोन स्मेकल की ये पंक्तियाँ देखो - "हिन्दी ज्ञान मेरे लिये अमृतपान है, जितनी बार उसे पीता हूँ, उतनी बार लगता है, पुनः जीता हूँ।"[२] उन्होंने हिन्दी में १२ से अधिक पुस्तकें लिखी हैं।

हिन्दी में सर्वप्रथम बी.बी.सी. लंदन ने नियमित समाचारों का प्रसारण शुरू किया था। किन्तु अब 'वॉयस ऑफ अमेरिका', 'जर्मन रेडियो', 'जापान रेडियो', 'विविध भारती' (सिलोण) आदि बहुचर्चित हैं। मॉरीशस, सूरीनाम, फिजी, दक्षिण अफ्रिका, ट्रिनीडाड आदि देशों में अब बहुत बड़ी संख्या में हिन्दी संस्थाओं द्वारा हिन्दी शिक्षण कार्य हो रहा है।

आज हिन्दी विश्व के कई देशों में पढ़ाई जाती है। इंटरनेट पर सरल हिन्दी डॉट कॉम वेब साइट पर हिन्दी शीर्षक के अंतर्गत हिन्दी समाचार, हिन्दी विकिपीड़िया, हिन्दी जाल निर्देशिका तथा यूनिकोड संबन्धी जानकारी प्राप्त होती है। यह प्रयास हिन्दी को सामान्य जन तक पहुँचाने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। भारत की भारतीयता 'हिन्दी' में है। अब 'हिन्दी' अंतर्राष्ट्रीय भूमण्डलीकरण युग की 'विश्वभाषा' बन चुकी है। हिन्दी भाषा के प्रति लोक प्रियता बढ़ रही है। विश्व भाषाओं में 'हिन्दी' को प्रथम स्थान मिलने में अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी।

संदर्भ सूची:

१. हिन्दी पत्रिकाओं का विवरण, भाषा जनवरी-फरवरी २०१२, केंद्रीय हिन्दी निदेशालय, भारत सरकार, पृ.सं.२३

२. हिन्दी भाषा के विविध रूप, डॉ.पी.लता, पृ.सं.१०९

३. हिन्दी भाषा शिक्षण-भाई योगेन्द्र जीत

फ्लावरतलावीटु, मुट्टाक्काट्, तिरुवनन्तपुरम, केरल।

हिन्दीः अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में

डॉ. जयश्री ओ.

भारत जैसे विशाल देश में १३० से अधिक भाषाएँ और तीन सौ अड़सठ से अधिक बोलियाँ जीवित और जाग्रत हैं। वहाँ राष्ट्रभाषा की समस्या निश्चय ही जटिल दुरूह और विवादग्रस्त कही जाएगी। संविधान की अष्टम अनुसूचित में शामिल देश की अठारही (अब बाईस) भाषाएँ हमारी राष्ट्रभाषाएँ हैं। लेकिन हिन्दी भारत के चालीस प्रतिशत से अधिक भारतीयों की भाषा है। इसलिए ही हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा बनने की योग्यता रखती है। भारत में दूसरे नम्बर तेलुंगु का है, जिसके भाषा-भाषी केवल छह प्रतिशत है। रवीन्द्रनाथ टैगोरजी के शब्दों में - "आधुनिक भारत की संस्कृति एक विकसित शतदल कमल के समान है; जिसका एक-एक दल एक-एक प्रान्तीय भाषा और उसकी साहित्य-संस्कृति है। किसी एक को मिटा देने से उस कमल की शोभा ही नष्ट हो जाएगी। हम चाहते हैं कि भारत की सब प्रान्तीय बोलियाँ, जिनमें सुन्दर साहित्यसृष्टि हुई है, अपने-अपने घर में (प्रान्त में) रानी बनकर रहे-प्रान्त के जन-गण की हार्दिक चिन्ता की प्रकाश भूमिस्वरूप कविता की भाषा होकर रहे और आधुनिक भाषाओं के हार की मध्य मणि हिन्दी भारत भारती होकर विराजती रहे"।[१] यों जनभाषा होने के कारण ही हिन्दी को राष्ट्रभाषा के साथ-साथ राजभाषा की प्रतिष्ठा भी मिली।

अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिन्दी के कई रंग और पक्ष है। हिन्दी समग्र भूमण्डल की तीसरी भाषा है। मारिशस, फीजी, त्रिनिदाद, गुयाना आदि देशों में हिन्दी का व्यापक प्रयोग है। इन देशों के हिन्दी प्रेमी इस भाषा के केवल भाषा के रूप में व्यवहार में नही लाते अपितु उसे वे अपनी संस्कृति का एक अंग भी समझते हैं। हिन्दी के वे अपने ऐतिहासिक संबन्धों की सांस्कृतिक कडी और अपनी भावात्मक एकता का मूल आधार मानते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भ में हिन्दी विश्वभाषा का अपना रूप ग्रहण करती है।

मारीशस की हिन्दी प्रचारिणी सभा के अध्यक्ष श्री जयनारायण राम का कहना है - "हिन्दी उपनिषद् - रामायण और गीता की बेटी बनकर आयी। यह उनके धर्म एवं संस्कृति का अंग बनकर अभी भी जीवित है"।

भारतीय प्रवासियों के साथ मारीशस, फीजी त्रिनिदाद ऐसे देशों में हिन्दी एक ओर सामाजिक, सांस्कृतिक के प्रतीक चिह्न बन गई तो दूसरी तरफ उनकी आपसी व्यवहार के संपर्क साधन भी बन गयी। इन विभिन्न देशों में जनसमुदाय की आधी संख्या प्रवासी भारतीयों की है, इन देशों में लोकगीतों और अनौपचारिक सन्दर्भों में हिन्दी बोली भोजपुरी का प्रयोग होता है पर जनसंपर्क तथा सामाजिक सांस्कृतिक अनुष्ठानों की भाषा मानक हिन्दी है। इस मानक हिन्दी में ही इन विभिन्न देशों में समाचार पत्रों का प्रकाशन भी हुआ। मारीशस से सबसे पहले १९०९ में हिन्दुस्थानी और मारीशस आर्य पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इन साप्ताहिक पत्रों के अतिरिक्त और कई पत्र निकलने प्रारंभ हुए - आभा, दर्पण, रणभेरी आदि साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं का विशेष स्थान है। फीजी में सन् १९२३ में फीजी समाचार नामक साप्ताहिक पत्र प्रकाशित हुआ। 'भारत पुत्र, बुद्धि, बुद्धिवाणी, जागृति, जयफीजी, सनातन सन्देश' आदि पत्रिकाओं का हिन्दी के प्रचार-प्रसार में विशेष स्थान रहा है। इन सभी देशों में जनभाषा एवं कार्यालयी भाषा और हैं। फिर भी इन जनभाषा राजभाषा के मध्य संप्रेषण लंत्र की एक कडी के रूप में हिन्दी की विशिष्ट भूमिका है।

प्रमुख चेक शिक्षाविद् डॉ.ओदेलोन स्मेकल का कहना है कि "हिन्दी ज्ञान मेरेलिए अमृतपान है, जितननी बार उसे पीता हूँ उतनी बार लगता है, पुनः जीता हूँ।"

अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भ में हिन्दी के दो और प्रयोजनपरक पक्ष हैं। बंगलादेश, श्रीलंका, इंडोनिशिया, मलेशिया, कम्बोडिया आदि देशों केलिए हिन्दी सामाजिक-सांस्कृतिक प्रेरणा प्रदान करती है। इसके अतिरिक्त अमेरिका, इंग्लैंड, सोवियत संघ, फ्रान्स, जापान, चेकोस्लोवाकिया आदि देशों में विदेशी भाषा के रूप में हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन का कार्य

जनसंचार माध्यमों में हिन्दी का वैश्विक रूप...

इस प्रकार विश्व की पहली वेबसाइट 'नई दुनिया कॉम', पहली बहुभाषी ई-मेल सेवा 'ई-पत्र' और पहला हिन्दी पोर्टल 'वेबदुनिया कॉम' इंटरनेट पर लाया गया।

इस क्रांतिकारी माध्यम ने एक नई विधा वेब या 'इंटरनेट पत्रकारिता' को जन्म दिया। 'साइबर जर्नलिज़्म' में कुछ समय पहले तक अंग्रेज़ी का एकाधिकार-सा था, लेकिन अब इसमें परिवर्तन आया है। दैनिक जागरण की वेब साइट 'जागरण डॉट कॉम' विश्व का नंबर एक हिन्दी न्यूज़ पोर्टल बन गया है।

अब सॉफ्टवेअर कंपनी सुवी इन्फार्मेशन सिस्टम्स, इंदौर ने हिन्दी देवनागरी में प्रथम निःशुल्क ई-मेल (ई-पत्र) सेवा का प्रारंभ किया, जिसमें देवनागरी के द्वार मुक्त से खुल गए। अब विश्व के दख्राज़े हिन्दी के लिए खुल गए हैं। हिन्दी पहली विश्वभाषा के पद के नज़दीक पहुँच गयी है।

हिन्दी भाषा : दशा और दिशा

सुमा आई.

हिन्दी भाषा ही एक ऐसी भाषा है जो आज़ादी के पूर्व संपूर्ण भारत को एक सूत्र में बाँधी थी। जार्ज ग्रियर्सन ने भारत में भाषाई सर्वेक्षण किया और ११ खंडों में 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया' प्रकाशित कराया। उसमें उन्होंने बनाया कि फारसी की तरह संस्कृत भी विदेशी भाषा है। देवनागरी लिपि की जगह रोमन लिपि स्वीकार कर ली जानी चाहिए। उत्तर भारत की भाषाएँ आर्य परिवार की है और दक्षिण भारत की भाषाएँ द्राविड़ परिवार की है। हिन्दी हिन्दुओं की भाषा है और उर्दु मुसलमानों की भाषा है। ग्रियर्सन के इस मत के पीछे का उद्देश्य संस्कृत और हिन्दी की कमर तोड़ना था और उत्तर और दक्षिण भाषा-भाषियों में विलगाव-भाव पैदा करना था।

लार्ड मैकाल ने भी भारतीय भाषाओं का तिरस्कार किया उनकी राय में "हिन्दुस्थान की भाषाएँ गई-गुज़री और कर्कश हैं"। सो मैकाले जैसे युरोपीय शासकों ने भारतीय जनता को 'सभ्य' अंग्रेज़ों के हिमायती बनाने के उद्देश्य से अंग्रेज़ी स्कूलों की स्थापना की। पश्चिमी सभ्यता के आदि भारतीय जनता ने उसे जी जान से अपना लिया। चीन, जापान, रूस जैसे देश अपनी राष्ट्रभाषा के ज़रिए प्रगति की सीढ़ी पर निरंतर आगे बढ़ रहे हैं। जब तुर्की अंग्रेजी सत्ता से मुक्त हुआ तो वहाँ के तमाम विशेषज्ञों ने तुर्की शासक कमल पशा से कहा कि तुर्की भाषा को अपनाने में "दस साल लगेंगे, तो उनका जवाब था दस साल इसी समय पूरे समझे जाए। अंग्रेज़ों के साथ अंग्रेज़ी को भी विदाई लेनी पड़ेगी।" हमारी बद्किस्मती यही है कि भारत के प्रशासकों में ऐसी इच्छाशक्ति नहीं है।

वर्तमान भारत में हिन्दी भाषा का प्रयोग विभिन्न क्षेत्रों में काफ़ी बढ़ गया है। हिन्दी का प्रचार-प्रसार भारत के बाहर बहुत सारे देशों में हो रहा है। सुरीनाम, मॉरिशस, फिजी, दक्षिण आफ्रिका जैसे देशों में हिन्दी की पढ़ाई और दैनिक जीवन में उसका इस्नेमाल होता है। सुरीनाम में देवनागरी के साथ-साथ रोमन लिपी में भी हिन्दी लिखी

हिन्दीः अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में...

भी हो रहा है। हिन्दी व्याकरण, हिन्दी शिक्षण सामग्री आदि क्षेत्रों में विदेशी भाषा के रूप में हिन्दी को इन देशों के विद्वान बहुत पहले से समृद्ध करते आए हैं। गत कुछ वर्षों में जर्मन-हिन्दी,रूसी, हिन्दी, हिन्दी चैक, नेपाली-हिन्दी, हिन्दी नैपाली, हिन्दी-डच, डच-हिन्दी आदि शब्दकोशों का प्रकाशन भी हुआ है। कुछ देशों में विदेशियों द्वारा हिन्दी के अनेक पत्रिकाओं का प्रकाशन भी हो रही है। मॉरिशियस के 'अनुराग-नोवें के शांतिदूत' जापान के सर्वोदय आदि इनमें प्रमुख हैं। इन्हीं भाषाओं में हिन्दी साहित्य का अनुवाद भी हो रहा है। जापान के भाषा विद्वान प्रो.वायवो दोई ने 'गोदान' उपन्यास का अनुवाद जापानी भाषा में किया। चीनी भाषा में रवीन्द्रनाथ टैगोर की कृतियों-फनीश्वरनाथ 'रेणु के उपन्यास' मैला आंचल आदि का अनुवाद भी हुआ हैं। चीन के ऐतिहासिक दीवार की स्वागत शिला पर 'ओम नमो भगवते' हिन्दी में लिखा गया है। फिजी के बाज़ारों में अंग्रेज़ी के साथ-साथ हिन्दी में भी नाम फलक लिखा जाता है। सन् १९३६ में यहाँ हिन्दी की पाठशाला खोली गयी।

आज हिन्दी विश्व की कई देशों में पढ़ाई जाती है। सन् २००९ तक की गणनाके अनुसार कुल १७५ विश्वविद्यालयों में विदेशों में हिन्दी पढ़ाई जाती है। उनमें ४५ विश्व विद्यालय अमेरिका में है। उनमें प्रमुख है - कालिफोरनिया, शिकागो, टैक्सास, कोलंबिया आदि। हिन्दी भाषा की जानकारी अमेरिका में एक सामायिक ज़रूरत के तौर पर देखी जा रही है। इसलिए ही यहाँ के स्कूलों में अब हिन्दी पढ़ाने की व्यवस्था भी हो रही है। उसके फलस्वरूप ही भारतीय शिक्षक श्री. अरुणप्रकाश द्वारा नैयार किये नमस्ते नामक पुस्तक को हिन्दी पाठ्य पुस्तक के रूप में पढ़ायी जाती है। उसी प्रकार हिन्दी में सर्वप्रथम बी.बी.सी. लंदन ने नियमित समाचारों का प्रसारण शुरू किया था। अब प्रसारण हेतु 'वायस ऑफ अमेरिका', जर्मन रेडियो, जापान रेडियो, पेंकिय रेडियो (चीन), सिलेण के विविध भारती आदि बहुचर्तित है।

इसी प्रकार हिन्दी ऐसा सामार्थ्यवान भाषा है। जिसकी जड़ें मज़बूत और गहरी हैं। वह दुनिया-भर में किसी न किसी माध्यम से जिंदा रही है। हम निस्सन्देह कह सकते हैं कि हिन्दी न तो मात्र व्याकरण या विशिष्ट भाषिक संरचना है बल्कि भाषा के रूप में वह सामाजिक प्रतीक है और साहित्य के रूप में एक जातीय परंपरा भी है। उसके पास विश्वबन्धुत्व की शक्ति हैं। इसलिए हमें चाहिए कि उसके साथ अपने को संबद्ध करें और अपने देश की गरिमा को ऊँचा उठायें।

जय हिन्द! जय हिन्दी।

असि. प्रोफेसर, यूनिवर्सिटी कॉलेज, तिरुवनन्तपुरम।

हिन्दी भाषा और विश्व हिन्दी सम्मेलन

डॉ.लक्ष्मी एस.एस

दक्षिण आफ्रिका, मलेशिया, फिजी, केनिया आदि राष्ट्रों में हिन्दी बोली जाती है। हिन्दी, रूस, अमेरिका, कानडा, जापान, स्वीडन आदि राष्ट्रों में प्रमुख भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है। आजकल भारत के बाहर १२५ से ज्यादा विश्वविद्यालयों में हिन्दी भाषा पढ़ाई जाती है। हिन्दी सत्तर से ज्यादा राष्ट्रों में प्रयुक्त होती है तथा अब हिन्दी ने चीनी भाषा से आगे निकलकर भाषा जाननेवालों की संख्या की दृष्टि से प्रथम स्थान ग्रहण कर लिया है।

हिन्दी भाषा का सबसे बड़ा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन है, 'विश्व हिन्दी सम्मेलन', जिसमें विश्व भर से हिन्दी-विद्वान, साहित्यकार, पत्रकार, भाषा-विज्ञानी, विषय विशेषज्ञ तथा हिन्दी प्रेमी जुटते हैं।

१९७५ में विश्व हिन्दी सम्मेलनों की श्रृंखला शुरू हुई। पहला विश्व हिन्दी सम्मेलन, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के सहयोग से नागपुर में सम्पन्न हुआ जिसमें विनोबाजी ने अपना बेबाक सन्देश भेजा। तब से अब तक आठ विश्व हिन्दी सम्मेलन और हो चुके हैं - मारीशस, नई दिल्ली, पुनः मारीशस, त्रिनिडाड व टोबेगो, लन्दन, सूरीनाम, न्यूयार्क में। नौवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन २०१२, जो हांसबर्ग में हुआ।

पहले विश्व हिन्दी सम्मेलन का बोधवाक्य था -"वसुधैव कुटुम्बकम"। सम्मेलन के मुख्य अतिथि थे - मॉरीशस के प्रधानमंत्री श्री शिवसागर रामगुलाम, जिनकी अध्यक्षता में मौरीशस से आये एक प्रतिनिधि मण्डल ने भी सम्मेलन में भाग लिया था।

दूसरे विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन मॉरीशस की धरती पर हुआ। मॉरीशस की राजधानी पोर्ट लुई में २८ अगस्त से ३० अगस्त १९७६ तक चले विश्व हिन्दी सम्मेलन के आयोजक राष्ट्रीय आयोजन समिति के अध्यक्ष मौरीशस के प्रधानमंत्री डॉ.सर शिवसागर रामगुलाम थे।

तीसरे विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन भारत की राजधानी दिल्ली में २८ अक्तूबर से ३० अक्तूबर १०८३ तक किया गया। सम्मेलन के लिए बनी राष्ट्रीय आयोजन समिति के अध्यक्ष तत्कालीन लोकसभा अध्यक्ष डॉ.बलराम जाखड़ थे। हिन्दी की सुप्रसिद्ध कवयित्री सुश्री महादेवी वर्मा समापन समारोह की मुख्य अतिथि थीं। इस अवसर पर उन्होंने दो टूक शब्दों में कहा था - "भारत के सरकारी कार्यालयों में हिन्दी के कामकाज की स्थिति उस रथ जैसी है जिसमें घोड़े आगे की बजाय पीछे जोत दिये गए हैं।"

चौथे विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन २ दिसंबर ४ दिसंबर १९९३ तक मॉरीशस की राजधानी पोर्ट युई में आयोजित किया गया।

पाँचवें विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन हुआ त्रिनिदाद एवं टोबेगो की राजधानी पोर्ट ऑफ स्पेन में हुआ था।

छठा विश्व हिन्दी सम्मेलन लन्दन में १४ सितंबर से १७ सितंबर १९९९ तक आयोजित किया गया। सम्मेलन का केन्द्रीय विषय था - डिंदी और भावी पीढ़ी।

सातवें विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन हुआ सूरीनाम की राजधानी पारामारिबो में २००३ में हुआ। सम्मेलन में भारत से २०० प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया।

आठवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन १३ जुलाई से १५ जुलाई २००७ तक संयुक्त राज्य अमेरिका की राजधानी न्यूयॉर्क में हुआ।

नवम विश्व हिन्दी सम्मेलन २२ सितंबर से चौबीस सितंबर २०१२ तक दक्षिण अफ्रीका के शहर जोहांसबर्ग में हूआ। सम्मेलन ने केन्द्रीय हिन्दी संस्थान की भी सराहना की।

सहायक पुस्तक: संस्कृति भाषा और साहित्य-डॉ.प्रभाकरन हेब्बार, इल्लत
सहायक वेबसाइट: hi.wikipedia.org/s/yis

पी.आर.एन.एस.एस.कॉलेज, मट्टन्नूर

हिन्दी भाषा : दशा और दिशा...

जाती है जिसे "सरनामी हिन्दी" कहा जाता है। मॉरिशस में महात्मागाँधी के नाम पर बना सांस्कृतिक केन्द्र और हिन्दी पाठशालाएँ विधिवत् कार्य कर रही है।

खड़ीबोली हिन्दी के वक्ता भारतेन्दु जी ने कहा था-

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति कौमूल।
बिनु निज भाषा, ज्ञान के, हृदय वसत सब शूल"।।

महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने भी कहा था-

"मैं देश की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूँ पर कोई मेरी भाषा (राष्ट्रभाषा) का अपमान करे ये मैं सहन कर सकता"।

हिन्दी भाषा की प्रतिष्ठा को बनाये रखने के लिए आज हमें ऐसे ही ललकारनेवाले भारतेन्दुजी और द्विवेदीजी का अनुसरण करने की परम आवश्यकता है। **असि. प्रोफेसर, यूनिवर्सिटी कॉलेज**

अन्तर्राष्ट्रीय संदर्भ में हिन्दी

डॉ.एलिसबत जार्ज

हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा तक सीमित न सहकर विश्व भाषा हो गयी है। आज वह विश्व की महान भाषा है। भारत के बाहर नेपाल, पाकिस्तान, बंगलादेश, मोरिशस, फिजी, त्रिनिडाड, कानेटा जैसे देशों में बसे प्रवासी भारतीयों के लिए अपनी संस्कृति से जोडने वाली कडी है।

भूगोलीकरण के इस युग में भाषा का महत्व पहले से बहुत अधिक बढ गया है। 'विश्वगाँव' की परिकल्पना साकार हो गयी है और संप्रेषणीयता की दृष्टि से हिन्दी व्यापार-वाणिज्य के क्षेत्र में अधिक उपयोगी सिद्ध हो रही है। प्रबल राष्ट्र के रूप में भारत की प्रगति विश्व देशों का ध्यान आकृष्ट कर लिया है। भारतीय संस्कृति, भाषा, साहित्य आदि के प्रति विश्व भर में रुचि बढ रही है। हिन्दी की विश्व-व्यापकता में दृश्य माध्यमों की भूमिका कम नहीं है। विशेषकर हिन्दी फिल्मों द्वारा हिन्दी भाषा की लोकप्रियता बढ गई।

विदेशों में बसे प्रवासी भारतीयों की संपर्क भाषा हिन्दी है। सांस्कृतिक एकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हिन्दी भाषा का प्रचार-प्रसार, पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो, टेलिविज़न द्वारा हो रहा है। प्रत्येक देश के भारतीय दूतावासों में हिन्दी अधिकारी नियुक्त है, जिनका कर्तव्य हिन्दी का प्रचार-प्रसार बढाना है। भारतीय सांस्कृतिक परिषद् के हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका 'गगनांचल' इन दूतावासों में उपलब्ध है।

हिन्दी भाषा का अध्ययन-अध्यापन विदेशी विश्वविद्यालयों में नियमित रूप से हो रहा है। अमेरिका में १३ विश्वविद्यालयों में हिन्दी का शोध-कार्य चल रहा है। (कोलंबिया, शिकागो, टेक्सस्, कालिफोर्निया) त्रिनिडाड में कुल जनसंख्या के आधे हिस्से के लोग भारतीय मूल के हैं। जापान के ८ विश्वविद्यालयों में हिन्दी स्नातकोत्तर स्तर तक पढायी जाती है।

टोक्यो विश्वविद्यालय के हिन्दी प्रोफसर डॉ.वायाओ दोई का परिश्रम हिन्दी प्रचार-प्रसार में सराहनीय है। प्रयाग विश्वविद्यालय से इन्होंने अपनी पी.एच.डी. उपाधि प्राप्त की थी। गोदान तथा अन्य हिन्दी रचनाओं का अनुवाद जापानी भाषा में किया है। चीन के प्रो. ची.श्येन का नाम भी उल्लेखनीय है। पकिस्तान, बंगलादेश, बर्कमा, नेपाल जैसे पडोसी देशों में हिन्दी का बराबर प्रचार-प्रसार हो रहा है। विश्व के लगभग १५० विश्वविद्यालयों में हिन्दी अध्ययन की व्यवस्था है।

हिन्दी के प्रचार-प्रसार में संसार माध्यमों की भूमिका महत्वपूर्ण है। जापान में रेडियो द्वारा हिन्दी समाचार और सांस्कृतिक कार्यक्रम नियमित रूप से प्रसारित होते हैं। 'सर्वोदय', 'जापानी भारती' जैसी पत्रिकायें काफ़ीसमय से प्रकाशित हो रही है।

प्रवासी भारतीयों तथा विदेशी हिन्दी विद्वानों ने हिन्दी साहित्य सृजन की दिशा में सफलता प्राप्त की है। फिजी के समला प्रसाद मिश्र, मोरीशस के अभिमन्यू अनंत (लाल पसीना-सहानी) प्रो.वासुदेव विश्णु दयाल, सूरीनाम के ब्रजेन्द्र कुमार भगत, मुंशी रहमान ख़ान आदि प्रवासी भारतीय साहित्यकार है।

चीन के प्रो. चिन्हिन होन के 'रामचरितमानस' का चीनी अनुवाद ख्याति प्राप्त रचना है। हिन्दी के मूल कृतिकारों में जूलियस फ्रेडरिक उलमन (वह श्रेष्ठ मूलक था), स्मेकल आदि प्रमुख हैं। फिजी के सूज़न हाब्स वे फिजी-हिन्दी-अंग्रेज़ी कोष का निर्माण किया है। फिजी में हिन्दी संवैधानिक संसदीय मान्यता प्राप्त भाषा भी है।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी आज मान्यता प्राप्त भाषा है। प्रवासी के साथ विदेशी भी हिन्दी को हृदय से लगा लिया है। पूर्व प्रधानमंन्त्री अटल बिहारी वाजपेयी की पंक्तिया यहाँ उद्धरणीय हैं-

"गूँज़ी हिन्दी विश्व में, स्वप्न हुआ साकार।
राष्ट्रसंघ के मंच में - हिन्दी का जयकार।"

सहायक ग्रंथ:

१. विश्व बाज़ार में हिन्दी-महिपाल सिंह, देवेन्द्र मिश्र
२. हिन्दी भाषा का समाज शास्त्र - रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव

बात करें कम

श्रीजगन्नाथ विश्व,
मानोबाल, २५, मिग हनुमान नगर,
नगोडा Jn. (म.प्र.) ४५६३३५

वक्त की आवाज अब गौर करें हम।
काम करें ज्यादा और बात करें कम।

फूलों को काँटों से रही सदा प्रीत है,
मिल जुल कर रहने की ये रीत है,
एकता के गीत गाएँ छोड रंजो-गम।
काम करें ज्यादा और बात करें कम।

मन में हो साहस मंजिल आसान है,
हिम्मत का हरदम होता सम्मान है,
बढ़ते ही रहना कदम से मिला कदम।
काम करें ज्यादा और बात करें कम।

सबको दे रहा चुनौती आज समय है,
कर्म से ही भाग्य का होता उदय है,
अजगर करे न चाकरी, झूठा है भ्रम।
काम करें ज्यादा और बात करें कम।

हिन्दी का विकास : विश्वभाषा के संदर्भ में

कमलानाथ एन.एम.

आधुनिक काल तक आते-आते हिन्दी भाषा का स्तर भारत भर में बढ़ गया। राष्ट्रभाषा, राजभाषा, संपर्क भाषा, राष्ट्रीय भाषा, संचार माध्यम की भाषा आदि विभिन्न विशेषणों के रूप में हिन्दी भाषा कार्य करने लगी। हिन्दी भाषा के विकासक्रम को मुद्दों में यों व्यक्त किया गया है। वे हैं -

विश्वभाषा के रूप में हिन्दी : भारत भर में हिन्दी को जितनी मान्यता प्राप्त है उतनी मान्यता हिन्दी को विदेशों में भी प्राप्त है यानी कि विश्व में हिन्दी की लोकप्रियता भी बढ़ गयी है। हिन्दी भाषा अपनी संरचनात्मक, मनोवैज्ञानिकता, प्रभविष्णुता, सर्वग्राह्यता तथा विपुल शब्द सामर्थ्य तथा अत्यधिक वैज्ञानिकता के कारण समूचे शब्द में ही नहीं अपितु विश्व भाषा के रूप में उभर कर सामने आ रही है। उघतन आंकडों के आधार पर कहें तो हिन्दी अब प्रथम स्थान पर है, अगर चीनी के सभी रूपों को सम्मिलित कर लिया जाए तो चीनी प्रथम हो जाती है। अंग्रेज़ी अब विश्व में तीसरे स्थान पर है। विश्व के लगभग चालीस से अधिक राष्ट्र के लोग हिन्दी समझते हैं।

विश्व के लगभग ९५ विश्वविद्यालयों में हिन्दी किसी न किसी स्तर पर पढाई जाती है। भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिक साधनाओं, संस्कृत वाङ्मय को जानने के लिए और भारत से व्यापारिक संबंध स्थापित करनके के लिए विदेशी लोग प्राचीन भारत के प्रति आकर्षित होते हैं। विदेश में रहनेवाले भारतीय हिन्दी के प्रति गौरव नहीं रखते वे स्नातक स्तर या स्नातकोत्तर स्तर पर हिन्दी नहीं पढ़ते। विदेशी लोग आधुनिक भारत की जानकारी केलिए हिन्दी पढ़ते हैं, प्राचीन भारत की जानकारी केलिए संस्कृत पढ़ते हैं और माध्यकालीन भारत की जानकारी केलिए फारसी एवं व्रज भाषा साहित्य पढ़ते हैं।

विदेश के विश्वविद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन अध्यापन स्नातक, स्नातकोत्तर स्तर तक होता है। ऐसे विश्वविद्यालयों में प्रमुख है लंदन विश्व विद्यालय मासको स्टेट यूनिवर्सिटी (रशिया), वेनिस (इटली) का विश्वविद्यालय, बर्कले विश्वविद्यालय (अमेरिका), शिकागो विश्वविद्यालय (अमेरिका), सिओल का विश्वविद्यालय (दक्षिण कोरिया), बेजिंग विश्वविद्यालय (चीन) आदि। यही नहीं विदेशी विश्वविद्यालयों में हिन्दी साहित्य पर खूब अनुसंधान भी हो रहा है।

हिन्दी का शब्द संपदा तो विशाल है। हिन्दी कालान्तर से ही साधुओं, संतो, फकीरों, पर्यटकों एवं जन सामान्य के मध्य वैचारिक आदान-प्रदान का मूल माध्यम रही है। विपुल शब्द संपदा के साथ साथ असीमित साहित्य एवं विश्व के अनगिनत शब्दों आत्मसातकर उसने जहाँ वैश्विक उदारता का परिचय दिया है, हिन्दी का स्थान विश्वस्तर तक बढ़ गया है। हिन्दी विश्व स्तर में अन्य भाषाओं से मुकाबला करने लायक भाषा बन गयी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

१. राष्ट्रभाषा हिन्दी, राहुल सांकृत्यायन, २००४, राधाकृष्ण प्रकाशन।
२. हिन्दी विविध व्यवहारों की भाषा, सुवास्त कुमार, १९९४, वाणी प्रकाशन।

अतिथि अध्यापिक, एम.एम.एस. गवर्णमेंट आर्ट्स एन्ड साइंस कॉलेज, मलयिनकीष़, तिरुवनन्तपुरम

कविता

स्पार्टाकस

डॉ.सुरेश उजाला
१०८-तकरोही, पं.दीनदयाल पुरम् मार्ग,
इन्दिरा नगर, लखनऊ (उ.प्र.)-२२६०१६

स्पार्टा मुझे याद है
तुम्हारे संघर्ष का नतीजा
दास प्रथा का अन्त।

इतिहास साक्षी है
उस बर्बर-व्यवस्था का
आग में तपती लोहे की मोहर
दाग दी जाती थी दासों के
चुतडों पर नगर पालिका के
सांड की तरह पहचान के लिए,

अजित-विजित
स्वामी-दास
खरीद-फरोख्त

स्वामी की मर्जी ही
दास का जीवन
जिन्हें- उतारा जाता था
जोडी के साथ तलवारों सहित
अरवाडे में, और
लडाया जाता था
मुर्गों-तीतरों और
बटेरों की भाँति
एक के मरने तक,

उफ! कितना दर्दनाक था
दास का जीवन

लेकिन स्पार्टा-लडाई के दौरान
तुमने कुछ कहा-कान में
अपने जोड़ीदार के

और तभी-
पलट गया इतिहास
दास-प्रथा का। •

विश्वभाषा के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी

दिव्या वी.एच.

विश्व में लगभग सत्तर करोड़ से ज़्यादा लोग हिन्दी जाननेवाले हैं। भारत के अलावा विश्व के अनेक देशों के लोग हिन्दी अध्ययन-अध्यापन कार्य कर रहे हैं। विश्व के लगभग एक सौ पचहत्तर विश्वविद्यालयों में हिन्दी अध्ययन-अध्यापन कार्य चल रहा है और विदेशों से अनेक अध्यापक एवं विद्यार्थी हिन्दी सीखने केलिए विदेशी सरकार के व्यय से भारत में भेजे जाते हैं। ऐसे विदेशी हिन्दी विद्यार्थियों को भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अधीनस्त केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के माध्यम से हिन्दी शिक्षण दिया जाता है। इसके अलावा भारत के अनेक हिन्दी अध्यापक विदेशों में अध्यापन कार्य कर रहे हैं।

यूरोप, अमेरिका, आस्ट्रेलिया, अफ्रिका और अनेक एशियाई देशों में भी हिन्दी का व्यवहार हो रहा है। इसके अलावा फिजी, थायलैंड, मलेशिया, सिंगपुर, सूरीनाम, ट्रिनीडाड, गुयाना, मॉरिशस आदि प्रवासी भारतीयोंवाले देशों में भी हिन्दी व्यवहार एवं पठन-पाठन हो रहे हैं। जो भारतीय विदेशों में गए थे वे तुलसी के रामचरितमानस जैसे हिन्दी के धार्मिक ग्रंथ भी साथ ले जाते थे और प्रवासियों और विदेशियों के बीच का संपर्क विदेशों में हिन्दी की व्यापकता का द्वार खोल दिया गया।

मॉरिशस में हिन्दी प्रचारिणी सभा की स्थापना ने वहाँ के हिन्दी प्रचार को सक्रियता प्रदान की। आगे स्कूलों में हिन्दी की पढ़ाई प्रारंभ हुई। हिन्दी साहित्य का भी वहाँ व्यापक रूप से विकास हुआ। मॉरियस के साहित्यकारों में सबसे प्रमुख है अभिमन्यु अनत, जिन्हें 'मॉरिशस के प्रेमचन्द' माने जाते हैं। 'हिन्दी प्रचारिणी सभा', 'हिन्दी परिषद' जैसे अनेक हिन्दी सेवी संस्थाएं तथा 'मॉरिशस के पत्र', 'नवजीवन' जैसे अनेक पत्र-पत्रिकाओं ने वहाँ के हिन्दी प्रचार में बहुत अधिक योगदान दिए। आज भी मॉरिशस में कई छात्र-छात्राएँ हिन्दी साहित्य सम्मेलन की परीक्षा में भाग लेते हैं।

फिजी में आज हिन्दी प्रमुख द्वितीय भाषा के रूप में विकसित हो चुकी है। संविधान में भी हिन्दी को मान्यता दी गई है। वहाँ के बाज़ारों में अंग्रेज़ी के साथ हिन्दी फलक भी लिखे जाते हैं। सडकों का नाम भी हिन्दी में हम देख सकते हैं।

सूरीनाम में आज हिन्दी प्रमुख संपर्क भाषा है। इन प्रदेशों में हिन्दी भाषा, साहित्य एवं फिल्मों के प्रति विशेष आकर्षण हम देख सकते हैं। हिन्दी अध्यापन कार्य भी सक्रिय रूप से यहाँ चल रहा है।

यूरोपीय देशों से रोम, बुल्गारिया, पूर्व जर्मनी, पश्चिम जर्मनी, रूस, चेकोस्लावाकिया, यूगोस्लावाकिया, पोलैंड, इटली, स्वीडन, फ्रांस जैसे अनेक देशों में हिन्दी की पठन-पाठन की व्यवस्था है। इनमें फ्रांस की यही विशेषता है कि फ्रांस के गाँर्सा द ताँसी ने ही हिन्दी साहित्य का इतिहास सबसे पहले फ्रेंच भाषा में लिखा है। रूस में हिन्दी भाषा का प्रचार इतना अधिक है कि वहाँ हिन्दी भाषा और साहित्य का व्यापक अध्ययन, साहित्यानुवाद एवं शोधकार्य सक्रिय रूप से चल रही है। ब्रिटन में हिन्दी का अध्ययन लंदन विश्वविद्यालय कैंब्रिज विश्वविद्यालय और सार्क विश्वविद्यालय में होता है। इटली की वेनिश और नेपल्स विश्वविद्यालय में हिन्दी नियमित रूप से पढ़ाई जाती है। जर्मनी के लगभग चौदह विश्वविद्यालयों में हिन्दी भाषा एवं साहित्य का अध्ययन-अध्यापन तथा शोधकार्य चल रही है। जर्मनी के वॉन विश्वविद्यालय वहाँ के हिन्दी भाषा प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

एशियाई प्रदेशों के हिन्दी प्रचार में जापान सबसे आगे हैं। वहाँ तोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ फोरेन लैंग्वेज नामक संस्था हिन्दी भाषा को बहुत अधिक प्रोत्साहन देता है। वहाँ के ओसाका यूनिवर्सिटी ऑफ फारेन स्टडीज़ में भी हिन्दी अध्ययन की सारी सुविधाएँ हैं। जापान के अलावा चीन, थाईलैंड, कंबोडिया, इंटोनेशिया, मलेशिया, तुर्की, इराक, लिबिया, अरब, कतर, दुबाई, अफ़गानिस्तान, उज्बेकिस्तान, नेपाल, म्यांमार, बंग्लादेश, पाकिस्तान आदि देशों में भी हिन्दी की बहुत अधिक प्रचार हुआ है। चीन के पेडचिंग विश्वविद्यालय हिन्दी के विकास में सक्रियता से भाग ले रही है। चीन के ऐतिहासिक दीवार की स्वागत शिला पर ओम नमो भगवते हिन्दी में लिखा गया है।

अमेरिका के स्कूलों में हिन्दी अध्ययन की व्यवस्था है। हिन्दी भाषा ज्ञान अमेरिका में एक सामयिक ज़रूरत के तौर पर देखी जा रही है। अमेरिका के लगभग पैंतालीस विश्वविद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन होता है। इसी तरह आस्ट्रेलिया के कैनबरा और मेलबान विश्वविद्यालय, कानडा के बैंकुवर, टोरण्टो और विण्डसर विश्वविद्यालयों में हिन्दी शिक्षण होता है। मैक्सिको, क्यूबा, बेनेजुएला, पेरु और अर्जेन्टिना तथा आफ्रिका के युगांडा, तंज़ानिया और केनिया तक हिन्दी भाषा व्यवहार देखने को मिलता है।

हिन्दी ग्रंथों का अन्य विदेशी भाषा में अनुवाद, रेडियो, दूरदर्शन, पत्रिका, इंटेरनेट जैसे संचार माध्यम हिन्दी को विश्वव्यापकता दिलाने में बहुत अधिक सहायक सिद्ध हुए। हिन्दी में सर्वप्रथम बी.बी.सी. लंदन

विश्व हिन्दी सम्मेलन : एक सामान्य अवलोकन

राखी एस.आर.

विश्व हिन्दी सम्मेलन हिन्दी भाषा का सबसे बड़ा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन है, जिसमें विश्व भर से हिन्दी विद्वान, साहित्यकार, पत्रकार, भाषा विज्ञानी विषय विशेषज्ञ तथा हिन्दी प्रेमी जुटते हैं। पिछले कई वर्षों से यह प्रत्येक चौथे - वर्ष आयोजित किया जाता है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की राष्ट्रभाषा के प्रति जागरुकता प्रदान करने लेखक व पाठक दोनों के स्तर पर हिन्दी साहित्य के प्रति सोकारों को और दृढ़ करने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहन देनी, समय-समय पर हिन्दी की विकास यात्रा का आकलन करने तथा हिन्दी के प्रति प्रवासी भारतीयों के भावुकतापूर्ण व महत्वपूर्ण रिश्तों को और अधिक गहराई व मान्यता प्रदान करने के उद्देश्य से उन्नीस सौ पचहत्तर (१९७५) में विश्व हिन्दी सम्मेलनों की श्रृंखला शुरु हुई। इस बारे में पूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्रीमती इंदिरागाँधी ने पहल की थी। पहला विश्व हिन्दी सम्मेलन राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा के सहयोग से नागपुर में संपन्न हुआ जिसमें विनोबाजी ने अपना बेबाक संदेश भेजा। तब से अब तक नौ विश्व हिन्दी सम्मेलन और हो चुके हैं - मॉरीशस, नई दिल्ली, पुनः मॉरीशस, त्रिनिडाड व टोबेगो, लंदन, सूरीनाम और न्यूयार्क में।

पहला विश्व हिन्दी सम्मेलन दस जनवरी से चौथह जनवरी उन्नीस सौ पचहत्तर (१९७५) तक नागपुर में आयोजित किया गया। सम्मेलन का आयोजन राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के तत्वावधान में हुआ। सम्मेलन से संबधित राष्ट्रीय आयोजन समिति के अध्यक्ष महामहिम उपराष्ट्रपति श्री.बी.डी.जत्ती थे। पहले विश्व हिन्दी सम्मेलन का बोधवाक्य था - "वसुधैव कुटुम्बकम"। सम्मेलन के मुख्य अतिथि थे मॉरीशस के प्रधानमंत्री श्री. शिवसागर रामगुलाम जिनकी अध्यक्षता में मॉरीशस से आये एक प्रतिनिधिमण्डल ने भी सम्मेलन में भाग लिया था।

दूसरे विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन मॉरीशस की धरती पर हुआ। मॉरीशस की राजधानी पोर्ट लुई में अठाईस अगस्त से तीस अगस्त उन्नीस सौ छिहत्तर (१९७६) तक चले विश्व इस सम्मेलन के आयोजक राष्ट्रीय आयोजन समिति के अध्यक्ष, मॉरीशस के प्रधानमंत्री डॉ.सर शिवसागर रामगुलाम थे। सम्मेलन में भारत से तत्कालीन केन्द्रीय स्वास्थ्य और परिवार नियोजन मंत्री डॉ.कर्णसिंह के नेतृत्व में तेईस सदस्यीय प्रतिनिधिमण्डल ने भाग लिया।

तीसरे विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन भारत की राजधानी दिल्ली में अठाईस अक्तूबर से तीस अक्तूबर उन्नीस सौ तिरासी (१९८३) तक किया गया। सम्मेलन केलिए बनी राष्ट्रीय आयोजन समिति के अध्यक्ष तत्कालीन लोकसभा अध्यक्ष डॉ. बलराम जाखड थे। इसमें मॉरीशस से आये प्रतिनिधि मण्डल ने भी हिस्सा लिया जिसके नेता थे श्री हरीश बुधू। सम्मेलन के आयोजन में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा ने प्रमुख भूमिका निभायी। हिन्दी की सुप्रसिद्ध कवयित्री सुश्री महादेवी वर्मा समापन समारोह की मुख्य अतिथि थी। इस अवसर पर उन्होंने ही एक शब्दों में कहा था - "भारत के सरकारी कार्यालयों में हिन्दी के कामकाज की स्थिती उस रथ जैसी हैं जिसमें घोडे आगे की बजाय पीछे जीत दिये गये हो"।

चौथे विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन दो दिसंबर से चार दिसंबर उन्नीस सौ तिरानब्बे (१९९३) तक मॉरीशस की राजधानी पोर्ट लुई में आयोजित किया गया। सत्रह (१७) साल के बाद मॉरीशस में एक बार फिर विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा था। इस बार के आयोजन का उत्तरदायित्व मॉरीशस के कला, संस्कृति, अवकाश एवं सुधार संस्थान मंत्री श्री. मुक्तेश्वर चुनी ने संभाला था। उन्हें राष्ट्रीय आयोजन समिति का अध्यक्ष-नियुक्त किया गया था। इसमें भारत से गये प्रतिनिधि मणडल के नेता थे, श्री मधुकर राव चौधरी।

पाँचवें विश्व हिन्दी-सम्मेलन का आयोजन हुआ त्रिनिदाद एवं टोबेगों की राजधानी पोर्ट ऑफ स्पेन में। तिथियाँ थी चार अप्रैल से आठ अप्रैल उन्नीस सौ छियानब्बे और आयोजक संस्था थी त्रिनीदाद की 'हिन्दी निधि'। सम्मेलन के प्रमुख संयोजक थे हिन्दी निधि के अध्यक्ष श्री चंका सीताराम। भारत की ओर से इस सम्मेलन में भाग लेनेवाले प्रतिनिधिमण्डल के नेता अरुणाचल प्रदेश के राज्यपाल श्री. माता प्रसाद

विश्वभाषा के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी...

ने नियमित समाचारों का प्रसारण के साथ शुरु किया। अब वॉयस ऑफ अमेरिका, जर्मन रेडियो (चीनी), विविध भारती (सिलोण) आदि हिन्दी प्रसारण में सब से प्रमुख है।

सहायक ग्रंथ सूची:

१. हिन्दी भाषा के विविध रुप, डॉ.पी.लता, प्रकाशक - केरल हिन्दी प्रचार सभा, संस्करण, २०१०
२. प्रयोजनमूलक हिन्दी, डॉ.पी.लता, प्रकाशक - केरल हिन्दी प्रचार सभा।

शोध छात्रा, सरकारी वनिता महाविद्यालय, तिरुवनन्तपुरम

हिन्दी: विश्व में भाषा भाषियों की दृष्टि से

डॉ.जयन्ती प्रसाद नैटियाल

प्रथम एवं सबसे लोकप्रिय भाषा-शोध रिपोर्ट 2015

प्रस्तावना :

विश्व स्तर पर हिन्दी की स्थिति के बारे में मेरा यह शोध १९८१ में शुरू हुआ था और सन् १९९७ में इसकी शोध रिपोर्ट भारत सरकार राजभाषा विभाग की पत्रिका राजभाषा भारती में हिन्दी एक अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है नामक शीर्षक से प्रकाशित हुई। इस प्रकाशन के उपरान्त सन् २००५ में इसकी विस्तृत रिपोर्ट विश्व भर में अनेक समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई, जिसका सम्पूर्ण विश्व में स्वागत हुआ व साथ ही सराहना हुई एवं इस शोध को मान्यता प्राप्त हुई। विश्व के अधिकांश विद्वानों व भाषाविदों ने इस तथ्य को स्वीकार कर लिया कि विश्व में हिन्दी जानने वाले सर्वाधिक हैं तथा मंदारिन दूसरे स्थान पर है। यह शोधकार्य भारत सरकार के प्रतिलिप्याधिकार पंजीयक (Registrar of copyright, Govt. of India) के पास पंजीयन क्रमांक L-26910/2006 पर मेरे नाम से पंजीकृत है।

मेरे शोध के संबंध में कुछ प्रतिक्रियाएँ:

विश्व में इन्टरनैट आदि जैसे माध्यमों से इस शोध के प्रकाशित होने पर विश्व समुदाय के अनेक विद्वानों ने इसे सराहा तथा इसकी प्रामाणिकता एवं सत्यता को स्वीकारा, लेकिन चीन के एक पोर्टल पर इस शोध पर विश्व समुदाय से अभिमत माँगे गए। इस पोर्टल पर मैंने निरंतर निगरानी रखी ताकि कोई प्रतिकूल टिप्पणी या कोई स्पष्टीकरण माँगा जाए तो मैं उसका समुचित उत्तर दे सकूँ, लेकिन इस पोर्टल पर किसी भी विद्वान ने इस तथ्य को नकारा नहीं बल्कि आश्चर्य व्यक्त किया कि हिन्दी इतनी व्यापक व लोक प्रिय है, यह उन्हें पहली बार इस शोध से मालूम हुआ।

भारत और लंदन के कुछ विद्वानों ने हिन्दी और उर्दू को समान भाषा मानने पर आपत्ति जताई लेकिन मैंने उन्हें बताया कि शब्दावली एवं वाक्य रचना तथा व्याकरण इन दोनों ही भाषाओं का समान है, यह अलग भाषा नहीं बल्कि हिन्दी का हिन्दुस्तानी स्वरूप है। अतः इसे एक ही भाषा के अंतर्गत माना जाएगा। भाषा वैज्ञानिक नियमों के अनुसार भी विश्व भर में यही भाषाओं के वर्गीकरण का सिद्धांत है।

विश्व हिन्दी सम्मेलन : एक सामान्य अवलोकन...

थे। सम्मेलन के केन्द्रीय विषय था - प्रवासी भारतीय और हिन्दी। जिन अन्य विषयों पर ध्यान केन्द्रित किया गया, वे थे - हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास, कैरेबियाई द्वीपों में हिन्दी की स्थिति एवं कंप्यूटर युग में हिन्दी की उपादेयता।

छठा विश्व हिन्दी सम्मेलन लंदन में चौबीस सितम्बर से अठारह सितंबर उन्नीस सौ निन्यानब्बे तक आयोजित किया गया। इसका अध्यक्ष थे डॉ.कृष्णकुमार और संयोजक डॉ.पद्मेश गुप्त। सम्मेलन का केन्द्रीय विषय था - हिन्दी और भावी पीढ़ी। सम्मेलन में विदेश राज्य मंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे के नेतृत्व में भारतीय प्रतिनिधि मण्डल ने भाग लिया। उपनेता थे प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ.विद्यानिवास मिश्र।

सातवें विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन हुआ सूरीनाम की राजधानी पारामारिवो में। तिथियाँ थी छः जून से नौ जून दो हज़ार तीन। सम्मेलन के आयोजक थे श्री.जानकी प्रसाद सिंह और केन्द्रीय विषय था - विश्व हिन्दी नई शताब्दी की चुनौतियाँ - सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व विदेश राज्य मंत्री श्री. दिग्विजय सिंह ने किया।

आठवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन तेरह जुलाई से पंद्रह जुलाई दो हज़ार सात तक संयुक्त राज्य अमेरिका की राजधानी न्यूयोर्क में हुआ। केन्द्रीय विषय था - विश्व मंच पर हिन्दी। इसका आयोजन भारत सरकार के विदेश मंत्रालय द्वारा किया गया। न्यूयोर्क में सम्मेलन के आयोजन से संबन्धित व्यवस्था अमेरिका की हिन्दी सेवी संस्थाओं के सहयोग से भारतीय विद्या भवन ने की थी। इस केलिए एक विषय वेबसाइट का निर्माण भी किया गया।

नौवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन बाईस सितंबर से चौबीस सितंबर तक दक्षिण अफ्रिका के शहर जोहांसबर्ग में संपन्न हुई। इसमें तीन सौ भारतीय शामिल हुआ।

जनवरी दस हम विश्व हिन्दी दिवस मना रहे हैं। हम भारतीय और हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी है। विश्वस्तर पर हिन्दी का स्थान महत्वपूर्ण है। भारतीय एवं केरलीय होने के नाते हमें हिन्दी भाषा का गौरव और बढ़ाना है, क्योंकि हिन्दी हमारे देश की धडकन है। जय हिन्द, जय हिन्दी।

शोध छात्रा, सरकारी महिला महाविद्यालय, तिरुवनन्तपुरम

अब तक प्रस्तुत शोध रिपोर्टों का सार:

हिन्दी विश्व में सबसे अधिक बोली व समझी जाती है तथा यह विश्व की सबसे लोक प्रिय भाषा है, यह मैंने अपनी शोध में सिद्ध किया है। इस शोध को मसय-समय पर अद्ययन किया जाता रहा है ताकि हर दो तीन साल के कालखण्ड में भाषा गत परिदृश्य में आए परिवर्तनों को रेखांकित किया जा सके। अब तक प्रकाशित हुई शोध रिपोर्टों का सार निम्नवत है:

(आँकड़े मिलियन में)

शोध रिपोर्ट का वर्ष	विश्व में हिन्दी जानने वाले	विश्व में चीनी जानने वाले	अंतर
शोध रिपोर्ट 1997	800	730	+70
शोध रिपोर्ट 2005	1022	900	+122
शोध रिपोर्ट 2007	1023	920	+103
शोध रिपोर्ट 2009	1100	967	+133
शोध रिपोर्ट 2012	1200	1050	+150
शोध रिपोर्ट 201	1300	1100	+200

स्रोत: डॉ. जयन्तीप्रसाद नौटियाल द्वारा किया गया शोध अध्ययन सन् २०१५ (अनुमानित आँकड़े)

यह शोध रिपोर्टों इस बात का अकाट्य प्रमाण हैं कि हिन्दी जानने वालों की संख्या विश्व में सबसे अधिक हैं तथा यह निरंतर बढ़ती जा रही है। इससे यह सिद्ध होता है कि हिन्दी विश्व की सबसे लोक प्रिय भाषा है।

हिन्दी: विश्व की सबसो लोकप्रिय भाषा:

हिन्दी विशव में सबसे लोकप्रिय भाषा है - यह तथ्य भी निर्विवादरूप से सिद्ध हो चुका है। इस तथ्य को अब अधिकांश विद्वान स्वीकार करने लगे हैं। इसका एक प्रमाण यह भी है कि भारत के प्रधान मंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी ने संयुक्त राष्ट्र संघ सहित विश्व के अनेक देशों में अपना व्याख्यान हिन्दी में ही दिया, यह व्याख्यान सम्पूर्ण विश्व में लोगों ने बड़े चाव से सुना व समझा। आदरणीय मोदी जी के सम्मान में इन कार्यक्रमों को भी हिन्दी में ही प्रसारित किया गया था। हिन्दी भाषा की लोकप्रियता और उसका प्रभा मंडल केवल भारत या भारत के पड़ोसी देशों तक ही सीमित नहीं है बल्कि सुदूर कैरेबियाई राष्ट्रों तक फैला है। मारीशस, फीजी, गुयाना, सूरीनम, ट्रिनिडाड और टोबेगो जैसे देशों में यह राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित है। इतना ही नहीं बल्कि इंडोनेशिया, अमेरिका, ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया, अफ्रीका और खाड़ी के देशों में हिन्दी बहुत लोकप्रिय है। विष् की १८७ जनता हिन्दी जानती है। इसलिए अनेक देश अपने प्रिंट मीडिया और इलैक्ट्रानिक मीडिया में हिन्दी को स्थान दे रहे हैं। इतना ही नहीं भारती फिल्में और टी.वी चैनलों के कार्यक्रम भी विश्व के कई देशों में चाव से देखे जाते हैं।

सार्वभौमीकरण और हिन्दी:

नब्बे के दशक के उपरान्त जब उदारीकरण व सार्वभौमीकरण अर्थात लिबरलाइज़ेशन एवं क्लोबेलाइज़ेशन का दौर भारत में चला तब ज्यादातर विचारकों का मत था कि ग्लोबेलाइज़ेशन से भारत के आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य में आमूचूल परिवर्तन हो जाएगा। आर्थिक दृष्टि से विदेशी पूँजीवाद फिर से शुरू हो जाएगा तथा हमारा सांस्कृतिक ताना-बाना ध्वस्त होकर पूरी तरह विदेशी संस्कृति हम पर हावी हो जाएगी व हमारी भारतीय भाषाएँ तथा विशेषतः हिन्दी विलुम प्रायः हो जाएगी। हिन्दी व भारतीय भाषाओं का स्थान अंग्रेजी ले लेगी। परन्तु यह हर्ष का विषय है कि ऐसा कुछ नहीं हुआ जैसा कि पूर्वानुमान लगाया जा रहा था। यह सत्य सिद्ध नहीं हुआ...!

ऐसा ही चिंतन उस दौर में भी आया था जब भारत में कम्प्यूटरों का आगमन हुआ था। अर्थात् १९८० के दशक से यह चिंतन चलने लगा था और लोगों को यही भय सता रहा था, परन्तु भारत में भाषा प्रौद्योगिकी ने काफी विकास किया है तथा आज हम; सब काम हिन्दी में व क्षेत्रीय भाषाओं में करने में सक्षम हैं। सोशियल मीड़िया में भी हिन्दी काफी तेज़ी से आगे बढ़ रही है।

अंग्रेजी परस्त मानसिकता व यथार्थ :

यह जानकर दुख होता है कि आधुनिकता के इस दौर में भारतीय जन मानस को कुछ नफासत पसंद और अंग्रेजी मानसिकता के लोग यह कह कर भ्रमित कर रहे हैं कि अब बिना अंग्रेजी जाने भारतीयों का कोई भविष्य नहीं है। यह नितांत हास्यस्पद है तथा यथार्थ इसके विपरीत है। इस दौर में हिन्दी भाषा का इतना विकास हुआ कि स्टार चैनल के रुर्पट मार्डोक को अपने स्टार कार्यक्रमों की टी आर पी बढ़ाने के लिए हिन्दी में लाना पड़ा। हिन्दी का वर्चस्व निरंतर बढ़ता ही जा रहा है तथा आज वह उस मुकाम पर पहुँच गई है जहाँ उसकी लोक प्रियता और ग्राह्यता को कोई अन्य भाषा चुनौती नहीं दे सकती है। हिन्दी आज विश्व में मनोरंजन की दुनिया में सबसे आगे है। यही कारण है कि सोनी, जी टी वी, डिस्कवरी चैनल, विदेशी कार्टून कार्यक्रम भी भारत में व हमारे पड़ोसी देशों में हिन्दी में प्रसारित होने लगे हैं।

भारत की सांस्कृतिक विरासत और हिन्दी :

भारत की सांस्कृतिक विरासत इतनी व्यापक है कि विश्व में इसकी तुलना किसी अन्य सभ्यता और संस्कृति से नहीं की जा सकती है। आपको मालूम ही होगा कि भारतीय वेद अर्थात ऋग्वेद को अंतर्राष्ट्रीय

ख्याति एवं विश्व थाती (धरोहर) का दर्जा तो पहले ही मिल चुका था। अब अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर १७५ देशों के समर्थन से संयुक्त राष्ट्र संघ ने २१ जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मान्यता दी है। १० जनवरी संसार के कई देशों में विश्व हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है। भारत और हिन्दी दोनों का वर्चस्व विश्व स्तर पर दिनों दिन बढ़ता ही जा रहा है। यह हमारे लिए गर्व का विषय है।

हिन्दी की लोकप्रियता : आर्थिक एवं राजनैतिक प्रभाव:

हिन्दी संख्या बल की दृष्टि से विश्व में सबसे अधिक है परन्तु संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिकृत भाषाओं में इसको स्थान नहीं मिल पाया है। इसका प्रमुख कारण यह है कि आर्थिक शक्ति और राजनैतिक शक्ति हिन्दी से प्रत्यक्षतः नहीं जुड़ी थी, जब कि भारत में परोक्ष रूप में हिन्दी ही राजनैतिक शक्ति व आर्थिक शक्ति का आधार पहले से ही रही है। आज स्थितियां बेहतर हो गई हैं। हिन्दी के पास प्रत्यक्षतः राजनैतिक शक्ति भी है और आर्थिक शक्ति भी...!! अतः इस परिदृश्य में हिन्दी की लोकप्रियता में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है।

विश्व में हिन्दी शिक्षण एवं प्रशिक्षण का प्रभाव :

विश्व में हिन्दी की लोकप्रियता को देखते हुए विश्व के १५० से अधिक देशों में हिन्दी शिक्षण एवं प्रशिक्षण के अनेक शिक्षण माध्यम शुरू हो गए हैं। यह इस बात का प्रमाण है कि विश्व में हिन्दी के प्रति अधिक झुकाव है। हिन्दी अध्यापन; अनेक हिन्दी संघों, हिन्दी संस्थाओं द्वारा चलाया जा रहा है। केन्द्र सरकार द्वारा भी हिन्दी अध्ययन हेतु हिन्दी शिक्षण योजना आदि चलाई जा रही हैं। विश्व के अनेक विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्व विद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन तेज़ी से चल रहा है। भारत में केन्द्र सरकार के प्रयासों व स्वयं सेवी संस्थाओं के प्रयासों से हिन्दी सीखने वालों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है। इसे निम्न लिखित तालिका से समझा जा सकता है:

क्षेत्र	कुल जन संख्या	हिन्दी जाननेवाले	प्रतिशत
क - क्षेत्र (हिन्दी भाषी राज्य)	61,72,26,843	61,72,25,843	100%
ख - क्षेत्र (हिन्दी और प्रंतीय भाषा का समान स्तर)	20,92,78,328	18,74,50,495	90.00%
ग - क्षेत्र (हिन्दीतर भाषी राज्य)	44,86,85,821	20,74,54,095	46.24%
कुल - संपूर्ण भारत	1,27,41,90,992	1,01,21,31,433	79.43%
भारत को छोड़कर अन्य देश	5,94,64,09,008	28,64,86,562	4,81%
विश्व की कुल जन संख्या	7,22,06,00,000	1,29,86,17,995	17.98%
(पूर्णांकित)	7,22,06,00,000	1,30,00,00,000	18.00%

स्रोत : डॉ.जयन्तीप्रसाद नौटियाल द्वारा किया गया शोध अध्ययन सन् २०१५ (अनुमानित आँकड़े)

विस्तृत जानकारी के लिए अनुबंध-१ एवं २ देखें।

मंदारिन बनाम हिन्दी :

सम्पूर्ण विश्व में यह प्रचारित किया जाता है कि मंदारिन सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है जब कि सत्य यह है कि सम्पूर्ण विश्व में मंदारिन जानने वाले २०१५ के आँकड़ों के अनुसार सिर्फ ११०० मिलियन हैं। चीन की सरकारी भाषा मंदारिन है तथा चीन में कुल जन संख्या का ७०७ भाग ही मंदारिन जानता है। चीन की वर्तमान जन संख्या १३६० मिलियन है। इसका अर्थ यह है कि चीन में मंदारिन जानने वाले केवल ९५० मिलियन हैं व १५० मिलियन अन्य देशों में हैं। यह ज्ञातव्य कि यह संख्या सन् २०१२ में १०५० मिलियन थी। अतः इसमें ५० मिलियन की वृद्धि हुई है। हिन्दी की लोकप्रियता व इसके अग्रणी होने की स्थिति इससे भी आँकी जा सकती है कि वर्ष २०१२ में इसे जानने वालों की संख्या १२०० मिलियन थी। यह २०१५ में प्रचुर बढ़ोत्तरी से यह १३०० मिलियन हो गई है अर्थात मंदारिन से २०० मिलियन ज्यादा। अंग्रेजी को तो सभी स्रोतों से सभी बोलियों और प्रवीणता के विभिन्न स्तरों को जोड़ने पर भी यह आँकड़ा अधिकतम १००० मिलियन तक बडी मुश्किल से पहुँचता है।

हिन्दी के संबंध में एक साधारण सी गणना नीचे दी जा रही है।

१.	भारत में हिन्दी जानने वाले	1012 मिलियन
२.	पाकिस्तान में हिन्दी जानने वाले	165 मिलियन
३.	बंगलादेश में हिन्दी जानने वाले	70 मिलियन
४.	नेपाल में हिन्दी जानने वाले	25 मिलियन
	४ राष्ट्रों में हिन्दी जानने वालों का योग	1272 मिलियन
६.	विश्व के अन्य राष्ट्रों में हिन्दी जानने वाले	28 मिलियन
	संपूर्ण विश्व में हिन्दी जानने वाले	1300 मिलियन

स्रोत: डॉ.जयन्ती प्रसाद नौटियाल द्वारा किया गया शोध अध्ययन सन् २०१५ (अनुमानित आँकड़े)

उप महाप्रबंधक, कार्परेशन बैंक,
कार्परेट कार्यालय, मंगलूर, कर्नाटक

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर के काव्य में राष्ट्रीय भावना

प्रो.डॉ.पंडित बन्ने

डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायर जी का मूल दृष्टिकोण राष्ट्रीय विचार धारा से ओत-प्रोत है। हिमालय गरज रहा है में जो क्षोभ और आक्रोश है वह किसी राष्ट्रवादी के हृदय पर हुए आघात की ही अभिव्यक्ति है। वास्तव में हिमालय गरज रहा है में भारत की आत्मा के आक्रोश का एक जीवंत स्मारक है। यह हिमालय वंदन उसकी विराट राष्ट्रीय चेतना का स्मारक है। हिमालय के मुख से कवि ने भारत की उदार मानवतावादी परंपराओं का यशोगान कराया है। इस देश में वीरों की कमी नहीं रही, पर यह देश किसी अन्य देश पर आक्रमण करने कभी नहीं गया। आक्रमण और अन्याय का प्रतिरोध करने में भी वह पीछे नहीं रहा। जैसे-

"मुझे याद है भारत की इक जनपद, जिसने सर न झुकाया डरकर अनायायी के आगे सतत अहिंसा उसका नारा।"

(हिमालय गरज रहा है - डॉ.नायर, पृ.८३)

देश पर चीन के आक्रमण पर हिमालय गरजकर उसे चुनौती देता है। इस देश में चंद्रगुप्त, भीष्म पितामह, राणाप्रताप, शिवाजी, वैलुत्तम्पी जैसे वीर तुम्हारे आक्रमण को विफल कर देने को प्रस्तुत है। तुम्हें वाल्मीकी, व्यास, कालिदास, शंकराचार्य, तुलसी, सम्बर, रवींद्र के इस देश पर आक्रमण करने पर लज्जित होना चाहिए।

"पावन विश्व महाकवियों का यह जन्मदेश है, युग जिनका भक्तिभाव से प्रणमन करता रुको, झुका दो अपना माथा।"

डॉ.नायर जी के साहित्य में मानवतावाद या विश्वबंधुत्व भावना है। अहिंसा और शांति मानवता के रक्षा कवच है। कई बार परिस्थिति ऐसी विषम आ जाती है जब संग्राम ही हमारा आपद धर्म बन जाता है। भारतीय वीर युद्ध का वरण तो करता है परंतु संहार के लिए नहीं अपितु मानवता की रक्षा के लिए। वीरों में मानवतावाद की भावना है। यही दृष्टिकोण इनके काव्य चित्रण हुआ है। कवि लिखते हैं-

"फिर भी सोचना है सौ बार तभी को संग्राम विवश हो रक्षित रहे मानवता, सहज सत्वों का आधार सबल हो।"

(हिमालय गरज रहा है, ड़ॉ.नायर, पृ.९२-९३)

मानव को मानव के रूप में प्रतिष्ठित करना ही मानवता है। मानवता की जो धारा महात्मागाँधी जी ने अपने सिद्धांतों में प्रवाहित की उसी भाव रस की अजस्त्र धारा डॉ.नायर जी के साहित्य में प्रवाहित है। कवि बार-बार अहिंसामूलक वैचारिकता का गायन करता है। कवि कहते हैं-

"जननी मेरी तेरे मन में कभी हिंसा की कामना लवलेश है नहीं आज भी विश्व कल्याण के हित ..... शक्ति का शांति प्रयोग ही तुम्हें प्रिय है" *(कविताएं देशभक्ति की - डॉ.नायर, पृ.५२)*

गाँधी जी ने प्राचीन संस्कृति के मानवतावादी सिद्धांतो को गहन कर मानव के विकास में उनका सदैव प्रयोग किया है। मानवता के सच्चे पूजारी मात्र गाँधी रहे हैं। डॉ.नायर जी ने बापू के सिद्धांतो को अपनाते हुए संपूर्ण विश्व की महान विभूतियों का स्मरण किया और मानवतावादी विश्वबंधुत्व की भावना से ओत-प्रोत है। कवि कहते हैं-

"त्याग का, विश्व बंधुत्व का यही नारा हमारा बुलंद रहे सचमुच यही युग नारा रहे।" *(कविताएँ देशभक्ति की - डॉ.नायर, पृ.५६)*

आदर्शविहीन समाज के उन्मूलन की भावना कवि के मानवतावादी दृष्टीकोण का प्रतीक है। मानवतावादी दृष्टिकोण मनुष्य का सबसे आदर्श है। आज से सत्ता - लोलुप मानवीय चेतना पर प्रहार करता है। डॉ.नायर जी कहते हैं-

"विडंबना है, यह सत्ताधारी नीति धिक है यह अभिशप्त मनःस्थिति हाँ, धन संपत्ति का सतुपयोग आज भी सुअवसर है अनेक रोकता है देश वर्ष का कालुष्य भूखों मरना क्या धरती का नियम है? देखते रह जाना है सज्जनता।"

(कविताएँ देशभक्ति की - डॉ.नायर, पृ.५२)

डॉ.नायर जी परंपरागत भारतीय सांस्कृतिक आदर्शों में गहन आस्था रखते हैं तथा उनका विश्वास है कि हमारे सांस्कृतिक उच्चादर्श चिरपुराण होने पर भी चिरनवीन है। वर्तमान वैज्ञानिक युग में मनुष्य भौतिक समृद्धि और विभवों के पीछे व्याकुल होकर दौड़ लगा रहा है। आत्मिक शांति और मानसिक स्थैर्य के लिए प्राचीन मानवीय आदर्श ही उपयोगी है। बापू और नेहरु का अभिनंदन कवि बड़ी भावुकता से करता है-

"हम धन्य है, हमारी जननी मातृभूमि धन्य है कि हमने अपनी ही आँखों मानव के ही रूप तुम्हें देखा है।"

कवि नायर की राष्ट्रीय भावना विश्व के सपूतों को श्रद्धांजली समर्पित करती है और उनके गौरव से अपने को भी गौरवान्वित समझती है। उन्होंने वीर पुरुषों, महात्माओं का स्मरण किया है। कवि की दृष्टि में ये भारतीय किसान सुकृति है। ये कृषक माता के सच्चे सपूत है, वीर संरक्षक है तथा माँ को स्वयं समर्पित है। ये अमृत पुत्र है। कवि नायर की समत्व भावना परिलक्षित होता है। उसकी राष्ट्रीय भावना मानवतावाद

लघुकथा

पत्नी का इलाज

वी. गोविन्द शेनाय

शंकर पत्नी को अस्पताल से घर ले आया। डाक्टर का निर्देश था कि मरीज घर पर अपनों के साथ शेष दिन गुजारें। दिल, गुरदे, आंतों और आँखें सब पर मधुमेह हावी ऐसा था कि कुछ भी ख़ास किया नहीं जा सकता था। शंकर ने उधार रुपया लेकर अस्पताली बिल चुकाया और ख़ाली हाथ घर आया पत्नी के साथ। ज्योतिषि याद आये, फिर मंत्रवादी और भगवान। परन्तु ख़ाली हाथ किया ही क्या जा सकता था! अस्पताल से लौटते वक्त टाउन हॉल के द्वार पर रखा बोर्ड देखा था। लिखा था मधुमेह से मुक्ति-संगोष्ठी-प्रदर्शनी प्रवेश मुफ्त। उस ओर चला दिया। संगोष्ठी क्या थी? व्यायाम की मशीन का भरवाना था। बिक्री की व्यवस्था थी। मूल्य प्रति मशीन इकसठ हज़ार रुपया मात्र। परचे मुफ्त। घर लौटने के सिवा करता क्या? घर आया तो नौकरानी द्वार पर ही मिली। नौकरानी ने कहा - डाक्टरनुमा आदमी आया था। कहता था - वारबूस-१५ चूर्ण बीमारी की हर स्थिति से जुझता है, संजीवनी है। नमूने की डिबिया लो। रुपया अग्रिम मिलाने पर चूर्ण का डिब्बा भेज देंगे। मैंने दो डिबियाँ माँगी नमूने की। उन्होंने एक ही दी। हाँ, परचों का एक बंडला ही दिया जो मैंने संभालकर रखा है। अब जो करना है सो आप करें। शंकर ने कहा - जो करना है सो तुमने कर ही दिया। उधर अन्दर पत्नी निश्चेष्ट होती जा रही थी।

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर के काव्य में राष्ट्रीय भावना...

की सुदृढ भित्ति पर अवस्थित है। दानवराज बलि के त्याग, दानशीलता, सत्य निष्ठा पर सौ बार अपने को न्योछावर करता है। चाहे देव हो दानव गुणी होना आवश्यक है। जन्म से दानव होते हुए भी बली गुण से देवत्व के अमरासन पर प्रतिष्ठित है।

डॉ. नायर जी की विश्वबंधुत्व भावना एवं मानवतावादी दृष्टि काव्य में ही नहीं अपितु उनके समग्र समन्वयवादी प्रवृत्ति ही भारतीय संस्कृति का प्राणसत्ता है। यही मूल्यवादी सांस्कृतिक चेतना भारतीयता है। अहिंसा भावना का प्रसार और मानवीय आदर्शों की रक्षा भारतीयता के दो तत्व है। भौतिकवादी आज के मानव का गर्व है कि वह एक क्षण में संसार का संहार कर सकता है। कवि ने हिमालय के स्वर में जनमानस तक पहुँचता है। नायर जी कहते हैं-

> "अब तो उसकी यही चुनौती मैं दुनिया का नाश करूँगा दुर्विनीत! बंद कर मुँह क्या दुनियाँ का? निजनाश करेगा।"
>
> *(हिमालय गरज रहा है - डॉ.नायर, पृ.८०)*

जनजीवन को सुरक्षित एवं सुखी बनाने की लालसा भारतीयता का प्रतीक है। देवत्व की साधना पथ पर आसीन व्यक्ति की सराहना भारतीय आदर्शों का निर्वाह है। डॉ.नायर जी ने ढोंग, अनाचार, आडंबर, संहार और लोक के शोषण का विरोध करते हैं। वैदिक कालिन संस्कृति का दिव्य स्वरूप है इसी में भारतीयता निहीत है।

> "शुभे रत्न गर्भे, समस्त जग की मंगल कामना में सदैव आशा विश्वास किए निर्व्दन्व्द-निर्वेर तुम विराजती हो वसुधा को अपना परिवार मान।" *(कविताएँ देशभक्ति की - डॉ.नायर, पृ.४५)*

आज आगे की नई पीढ़ी उसे अपने कुकर्मों से रौंद रही है और इसी से हमारी चिरपुरातन संस्कृति का हनन हो रहा है। नायर जी देश की इस विषय परिस्थिति से पीड़ित हौ और वह मनुष्य को अपने साहित्य द्वारा शिक्षा देने का आशावादी है। अपना महान देश का भविष्य सुधारें। नई पीढ़ी को आशावादी एवं सही रास्ता दिखाने का काम डॉ.नायर जी करते हैं। कवि कहते हैं-

> "नवयुवकों को सही मार्ग दिखाऊँ कुत्सित फैंशनम से उन्हें बचाऊँ सत्य-अहिंसा के ताने बाने में छात्रों का जीवन बुन डालूँ में चलने लगे निष्ठा क्रम-क्रम बहुआयामी उमंग भरे कार्यक्रम।"
>
> *(कविताएँ देशभक्ति की - डॉ.नायर, पृ.७५)*

कवि डॉ. नायर जी पर गाँधीवाद का प्रभाव है। वे गाँधी जी का गुणगान करते हैं। कवि शांतिदूत गाँधी जी को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए लिखते हैं-

> "सचमुच गाँधी जी युग नायक रहे थे स्वय् विश्व नागरिक इस सच्चे सत्यान्वेषी का वसुधा ही घर रहेगी सदा।"
>
> *(हिमालय गरज रहा है - डॉ.नायर, पृ.८४)*

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि डॉ. नायर जी गाँधीवादी साहित्यकार है। उनके साहित्य में सामाजहित, लोककल्याण की भावना, राष्ट्रीय चेतना एवं भारतीयता की धारा सदैव बहती रही तै। देशभक्ति एवं राष्ट्रीय भावना के कारण हिन्दी काव्य विकास के पथ पर एक अनमोल रत्न है। डॉ.नायर जी का मूल स्वर राष्ट्रीय चेतना और भारतीय संस्कृति है। देश प्रेम उनकी कविता का प्राण है।

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, भारत महाविद्यालय, जेऊर (म.रेल), तह-करमाला, जि-सोलापुर (महाराष्ट्र)

हिन्दी की समृद्धता और सम्बद्धता

नन्दकिशोर बावनिया

भारत की संविधान सभा ने दि. १४ सितम्बर १९४९ को हिन्दी को भारतीय संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया था। अनुच्छेद ३४३ के तहत संघ की राजभाषा हिन्दी होगी, उसकी लिपि देवनागरी होगी एवं हिन्दी अंकों का रूप अन्तर्राष्ट्रीय रूप होगा। संसद में प्रयुक्त होने वाली भाषा में भाग ५ अनुच्छेद १२०(१) के अनुसार संसदीय कार्य हिन्दी अथवा अंग्रेजी में किया जावेगा। देश की अखण्डता को बचाये रखने के लिए सभी प्रादेशिक भाषाओं का उन्नयन एवं प्रयोग अपने क्षेत्रों में तो होना ही चाहिये वरन उसका क्षेत्र विस्तार भी होना चाहिये। सभी प्रदेशों के लोग भारत के विभिन्न क्षेत्रों में फैले हुए है और अपनी संस्कृति, परम्परायें और भाषा को संजोए हुए है राष्ट्र भाषा हिन्दी तो राष्ट्रीय एकता की आधार शिला है।

दूरदर्शन, आकाशवाणी और चल चित्रों के माध्यम से हिन्दी जन भाषा के रूप में स्थान रखती है भारत के दक्षिणी क्षेत्रों केरल, कर्नाटक, आंध्रा व तमिलनाडु राज्यों कन्नड, तेलगू, तमिल ओर मलयालम भाषाओं की अपनी विशिष्टता, लिपिया और शब्द भण्डार, व्याकरण और समृद्ध साहित्यिक परंपरा भी है दक्षिण प्रदेशों में हिन्दी भाषा को समझा और बोला जाता है देखा जाना है कि जब कोई नागरिक पूर्व पश्चिम, उत्तर, दक्षिम दिशा में स्थित चारों धामों की यात्रा करता है तो उसे दक्षिण में किसी भी प्रकार की भाषा सम्बन्धी कोई समस्या नहीं होती। जब दक्षिण भारतीय उत्तर भारत की यात्रा करते है तो भी नहीं। क्योंकि हिन्दी पूरे देश की सम्पर्क भाषा के रूप में राष्ट्रीय एकता को मजबूत बनाती है।

मूल भाषा संस्कृत है। यह सभी भारतीय भाषाओं की जननी है। कालान्तर में संस्कृत शब्दों की उच्चारण कठिनता और अधिकांश अशिक्षित ग्रामीणों ने हिन्दी की खडी बोली को विकसित होने से सहयोग दिया। जो आम आदमी की समझ में जल्दी आ जाती है एवं बोलने में भी सरल ही होती है। हिन्दी में जो बोला जाता है वही लिखा भी जाता है इसलिये कम्प्यूटर युग में भी हिन्दी ने अपना वर्चस्व बनाये रखा है। कम्प्यूटर के बेताज बादशाह बिल गेट्स ने इस सच्चाई को स्वीकारा है कि हिन्दी की देवनागरी लिपि पुर्णतया वैज्ञानिक ओर कम्प्यूटर के लिए उपयुक्त है इस भाषा में समयानुसार दूसरी भाषा के शब्दों ने भी अपना स्थान बना लिया। मुगलों के शासन के दौरान फिर अंग्रेजो, फ्रांसीसी पुर्तगाली की गुलामी के दौरान भी उनकी भाषा के कई शब्द हिन्दी में आ गये। पहले तो तत्सम शब्दों से तत्भव शब्द हुए जैसे वार्ता का रूप बात हस्ती का रूप हाथी क्षीर की खीर, वानर का बन्दर आदि। कुछ देशज और स्थानीय भाषा के शब्दों का भी समय अनुसार इसमें सम्मिलन हुआ है। जन भाषा के रूप में देशज शब्दों ने जैसे थैला, खिडकी, पडोसी, टांग, झाडू, रोटी, पगडी, खटिया, लोटा आदि।

प्राचीन समय में भारत का व्यापार दूर देशों में फैला हुआ था। ज्यादातर अरब देशों में। हमारे व्यापारी अरब देशों तक माल ले जाते और अरब वाले यहाँ बेचते थे इसलिये कुछ शब्द आगत शब्दों के रूप में हिन्दी में प्रवेश कर गये। जैसे वकील, रिश्वत, औलाद, अमीर, कसुर खुफिया, किताब, बाजार, नजर आदि। कुछ शब्द फारसी के भी प्रचलित है कारतुस, कारवां, चादर, दीवार, जिंदा, चमन, कारोबार, कागज, आफत आदि।

हिन्दी में सबसे ज्यादा प्रचलित शब्द अंग्रेजी से आये है क्यों कि हमारे देश पर अंग्रेजो का शासन करीब दो सदी तक रहा। स्वाभाविक है कि उनसे वार्तालाप करने के लिए अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया जाय। ये आज की हिन्दी बोलचाल में अपना स्थान रखते हैं। अफसर, अक्ल, अगस्त, ड्रायवर; गेस, पेनसील, बोटल, कम्पनी, कालेज, टाईम, प्लेटफार्म, बैच, बटन, मेनेजर, मोटर, रेडियो, राशन, स्कूल, सेकण्ड, होटल, डायरी, डाक्टर; अपील, फिलम, ड्यूटी, टावेल, रोड, रेल, नम्बर, आदि।

यहाँ उल्लेखनीय होगा कि कुछ पुर्तगाली, कुछ यूनानी ओर चीनी भाषा से भी आये हे। आलपीन, कम्पास, कमीज, नीलाम, चाबी, गोदाम (पुर्तगाली); चाय, पटाखा, तूफान (चीनी भाषा); टलीफोन, ऐटम (यूनानी भाषा); कर्फ्यू, इंजीनियर, पुलीस (फ्रोंसीसी भाषा)।

इस प्रकार हम देखते है कि हिन्दी स्वयं समृद्ध होते हुए भी उसने अपनी ग्रहण क्षमता को बढाता है और दूसरी भाषा के शब्दों को भी सम्मान दिया है। जिससे बोलचाल में इन शब्दों के प्रयोग से सरलता से वार्तालाप किया जा सके। ऐसा नहीं है कि हिन्दी ने ही दूसरी भाषाओं के शब्दों को अपने हृदय में स्थान दिया वरन् हिन्दी भाषा के अथवा संस्कृत के अनेक शब्द, अंग्रेजी, फ्रांसीसी, चीनी और पुर्तगाली भाषा में देखे जा सकते हैं माननीय अटल बिहारी बाजपेयीजी ने संयुक्त राष्ट्र संघ हिन्दी में भाषण देकर हिन्दी का मान विश्व में बढाया था।

लेखक परिचय : *सेवा निवृत शिक्षक, एम.ए.बी.एड। कहानी, कविता, लघुकथा एवं आलेख लिखने में रुचि। सम्मानों से सम्मानित। देश की विभिन्न प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में एवं अखिल भारतीय संकलनों में रचनाओं का स्थान। रेडियो से रचनाओं का प्रसारण। म.प्र लेखक संघ, धार में पदाधिकारी।*

63, सरस्वती नगर, धार(म.प्र.) 454001. मो: 09406669333

150वें जयन्ती वर्ष के अवसर पर युग पुरुष : स्वामी विवेकानन्द

बद्रीनारायण तिवारी

भारत में १९ वीं सदी के एक दशक में तीन महान व्यक्ति उत्पन्न हुए - स्वामी विवेकानन्द १२ जनवरी, १९६३; रवीन्द्रनाथ ठाकुर ७ मई १८६१ और महात्मा गाँधी २ अक्टूबर, १८६९ को भारतीय इतिहास के इस स्वर्णिम दशक में ये तीनों महापुरुष आधुनिक भारत में अपने-अपने क्षेत्र में शलाका पुरुष बने। स्वामी विवेकानन्द का मूल नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था। बंगाल के कोलकाता महानगर में उनका जन्म हुआ था। स्वामी विवेकानन्द मात्र ३९ वर्ष की अल्पायु में ही उन्होंने हिन्दू धर्म की सहिष्णुता को एक नया अर्थ दिया।

स्वामी विवेकानन्द धर्म और अध्यात्म के क्षेत्र में, गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने साहित्य में और महात्मा गाँधी ने अंग्रेजों से दासता की मुक्ति का स्वाधीनता संग्राम एवं श्वेत-श्याम रंग भेद पर संघर्ष का सूत्रपात किया। इन तीनों महापुरुषों में स्वामी विवेकानन्द ने अपने समय में तथा परवर्ती काल में भारतीय चेतना को सर्वाधिक प्रभावित किया। उन्होंने हिन्दू धर्म की सहिष्णुता को नया अर्थ प्रदान किया। स्वामी विवेकानन्द ने सर्वप्रथम धार्मिक शिक्षा में ईश्वर की सेवा का वास्तविक अर्थ गरीबों की सेवा है बताया। उन्होंने साधुओं-पंण्डितों, मन्दिरों-मस्जिदों, गिरजाघरों, गोम्पाओं के इस पारम्परिक विचारों को नकार दिया कि धार्मिक जीवन का उद्देश्य केवल सन्यास के उच्चतर मूल्यों को मोक्ष को पाना है। इसके बजाय उन्होंने निर्धन और दीन-हीन लोगों की निष्काम सेवा पर अधिक जोर दिया। इस प्रत्यक्ष सिद्ध सत्य को एक नया शब्द दरिद्र नारायण दिया यानी ईश्वर का वास्तविक निवास निर्धन और असहाय लोगों में होता है। इस दरिद्र नारायण शब्द ने सभी धार्मिक आस्थावान लोगों में एक कर्तव्य की भावना को जागृत किया, कि ईश्वर की सेवा का अर्थ गरीबों-असहायों की सेवा है।

सुप्रसिद्ध गीतकार पद्मश्री गोपालदास नीरज भी स्वामी विवेकानन्द से अत्यधिक प्रभावित हो अपनी पंक्तियों में रेखांकित करते हैं।

"जाँति-पाँति से बड़ा धर्म है, धर्म है, धर्म-ध्यान से बड़ा कर्म है,
कर्म-काण्ड से बड़ा मर्म है मगर सभी से बड़ा यहाँ यह छोटा-सा इन्सान
है और अगर वह प्यार करे तो धरती स्वर्ग समान है।"

इससे भी अधिक स्वामी विवेकानन्द की मूल भावनाओं को नीरज जी की रचना में कितना यथार्थ व्यक्त हो रहा है:

"... मेरे दुःख दर्द का तुझ पर हो असर कुछ ऐसा मैं हूँ भूखा तो तुझसे भी न खाया जाए। जिस्म दो होके भी दिल एक हो अपने ऐसे मेरा आँसू तेरे पलकों से उठाया जाए।"

स्वामी विवेकानन्द ने वेदान्त दर्शन के गूढ़ सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार करने हेतु सर्वप्रथम भारत के सभी भागों में आदर्श शिक्षा तथा चिकित्सा उपलब्ध कराने हेतु रामकृष्ण मिशन जैसी उच्च सेवा भावना की संस्था की स्थापना भी की। इसी मानवता की सेवा को स्वामी विवेकानन्द आध्यात्मिक जीवन का प्रथम सोपान की मान्यता देते थे। उन्होंने विश्व धर्म संसद के आयोजित अमेरिका में शिकागो के सभी धर्मों के शिखरपुरुषों के विश्व सम्मेलन में अद्भुत व्याख्या से प्रभावित किया। धर्म वह वस्तु है जिससे पशु मनुष्य तक और मनुष्य परमात्मा तक उड़ सकता है।

वस्तुतः स्वामी विवेकानन्द के योगदान को परस्पर सम्बद्ध तीन आयामों में देखा जाना चाहिए। सर्वप्रथम धर्म को उन्होंने केन्द्रीय स्थान पर प्रतिष्ठापित किया और उसे सर्वधा नया अर्थ दिया यानी दरिद्र नारायण की सेवा ही धर्म का मूल आधार है। दूसरा उन्होंने विभिन्न सम्प्रदायों धर्मों में आपसी सद्भाव पर विशेष जोर दिया। उनकी दृष्टि में तीसरा शिक्षण आज भी पूर्ण रुप से प्रासंगिक है।

स्वामी विवेकानन्द के समकालीन जर्मनी के सुप्रसिद्ध दार्शनिक चिंतक फ्रेडरिक नीत्शे (१८४४-१९००) ने सार्वजनिक घोषणा की थी कि ईश्वर मर चुका है। परवर्ती विचारकों और विद्वान लेखकों ने इसकी पुष्टि करते हुए कहा कि अब लोगों को पहले जैसी अभिरुचि नहीं रह गयी है। धर्म से अधिक विज्ञान और बौद्धिकता मानवीय प्रवृत्तियों को संचालित करने में निर्णायक भूमिका निभाती है। यह स्वामी विवेकानन्द को स्वीकार नहीं था, इसलिए उन्होंने धर्म को पूर्णरूपेण नया अर्थ दिया। इसके पूर्व अतीत में भारत में एक अनीश्वरवादी दर्शन के प्रणेता चार्वाक के उस सिद्धान्त को यहां समाज में नकारा गया कि खाओ, पिओ, मौज करो न कोई ईश्वर है या स्वर्ग-नरक। इसको समाज ने किसी प्रकार नहीं मान्यता प्रदान की।

गौतम बुद्ध की तरह स्वामी विवेकानन्द ने समाज के आचरण में बौद्धिक चेतना को प्राथमिकता दी। उनका स्पष्ट मत था कि हम पूर्ण रुपेण तर्क सम्मत और युक्ति संगत ही कार्य करें। प्रत्येक व्यक्ति धर्म का ऐसा पथ अपनाए जिसमें स्थायित्व और विश्वसनीयता हो। वह किसी जाति, प्रजाति, समुदाय या धर्म का क्यों न हो प्रत्येक व्यक्ति के बौद्धिक विकास पर जोर दे। कोई भी सम्प्रदाय या धर्म परस्पर शोषण, द्वेष या

(शेष अंश कवर पृष्ठ तीन में)

☞ विश्व हिन्दी सम्मेलन दिवस के श्रोता सदस्यों का एक विभाग

☞ डॉ. चन्द्रशेखर नायर बोलते हैं

१५०वें जयन्ती वर्ष के अवसर पर युग पुरुष : स्वामी विवेकानन्द... (२२ वाँ पृष्ठ से शेष भाग)

युद्ध का समर्थन करता हो वह मान्य नहीं हो सकता। इसके विपरीत स्वामी विवेकानन्द ने सर्वाधिक मान्यता इसी बात पर दी कि प्रत्येक धर्म निर्धन की सेवा करें, और समाज के दलित अशिक्षित लोगों की अज्ञानता, दरिद्रता और रोगियों की चिकित्सा सेवा करे।

युग पुरुष स्वामी विवेकानन्द ने शत्रुता या वैमनस्य को दूर करके वेदान्त दर्शन के सिद्धान्तों के वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को, तुलसी के शब्दों में - सिया राम मय सब जग जानी तथा जनसामान्य शब्दों में प्रेम की ज्योति जलाते चलो प्रेम की गंगा बहाते चलो का उद्घोष किया। इसी को साकार रूप देते हुए नया शब्द दिया दरिद्र नारायण यानी ईश्वर का निवास गरीबों और असहाय लोगों में होता है। ईश्वर की वास्तविक सेवा का अर्थ दरिद्र, निर्धन-असहाय लोगों की सेवा को स्वामी विवेकानन्द ने पूजा की मान्यता प्रदान की है। (आकाशवाणी लखनऊ केन्द्र से १२ जनवरी को प्रसारित)

मानस संगम, महाराज प्रयाग नारायण मंदिर (शिवाला), कानपुर नगर-२०८००१

एन.एस.एस. करयोगम प्रेसिडेंड श्री.गोपीनाथन नायर भाषण देते हैं।

विश्व हिन्दी सम्मेलन में प्रख्यात गाँधी स्मारक निधि अध्यक्ष श्री.पी.गोपीनाथन नायर का भाषण।

विश्व हिन्दी सम्मेलन में हास्य कवि डॉ.जी.रामचन्द्रन नायर भाषण देते हैं।

विश्व हिन्दी सम्मेलन में १०१ वर्ष के वयोवृद्ध अट्वाकेट श्री अय्यप्पन पिल्लै अनुग्रह भाषण देते हैं।

विश्व हिन्दी सम्मेलन का प्रार्थना सन्दर्भ

डॉ.चन्द्रशेखरन नायर रामायण कथा निःशुल्क वितरण डॉ.टी.पी.शंकरनकुट्टि नायर को देते हुए करते हैं।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के लिए शोध-पत्रिका डा.एन. चन्द्रशेखरन नायर, श्री निकेतन, तिरुवनन्तपुरम - ४
द्वारा मुद्रित संपादित और श्रीरामदासमिशन प्रिंटिंग एण्ड पब्लिशिंग हाऊस, तिरुवनन्तपुरम-८७ में मुद्रित।